त्रैमासिक
मूल्य : 20 रुपए
जुलाई-सितम्बर 2014

कोंपल

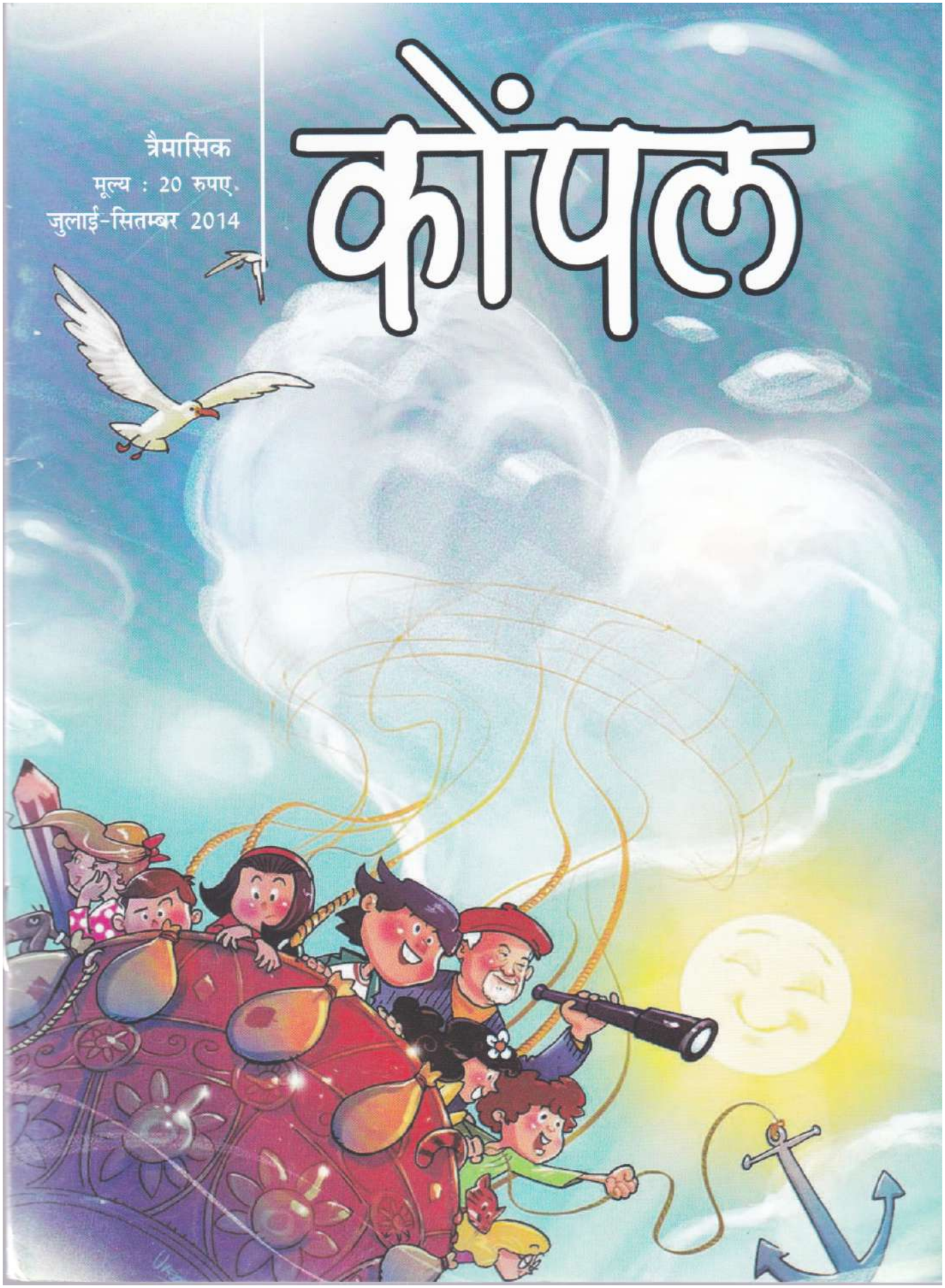

जुलाई-अगस्त-सितम्बर की कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

23 जुलाई (1906)

महान क्रान्तिकारी, हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के कमाण्डर अमर शहीद चन्द्रशेखर आज़ाद का जन्मदिवस।

23 जुलाई (1802)

प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक, 'थ्री मस्कीटियर्स', 'काउण्ट ऑफ माण्टे क्रिस्टो', 'आपल हरे' जैसे उपन्यासों के रचयिता अलेक्जेंडर डूयूमा का जन्मदिवस।

31 जुलाई (1880)

महान कथाकार, भारतीय जनता के दुख-दर्द, आशाओं और सपनों को अपनी कलम के माध्यम से सामने लाने वाले कलम के सिपाही प्रेमचन्द का जन्मदिवस।

31 जुलाई (1940)

शहीद ऊधमसिंह का बलिदान दिवस। अंग्रेजों द्वारा 1919 में जलियांवाला बाग में आम निहत्थी जनता पर बर्बर हत्याकाण्ड के प्रत्यक्षदर्शी बालक ऊधमसिंह ने हत्यारों को सजा देने का संकल्प बाँध था। देश की बेगुनाह जनता पर गोलियाँ चलवाई थीं जनरल डायर ने। ऊधमसिंह ने इंग्लैण्ड जाकर लगभग 20 वर्षों बाद हत्यारे से बदला लिया। भेष बदले ऊधमसिंह ने इंग्लैण्ड के कैंग्स्टन हाल में भरी सभा में सर माइकल ओडवायर को गोलियों से भून दिया। ऊधमसिंह गिरफ्तार हो गये और अंग्रेज जालिमों ने इसी दिन उन्हें फाँसी की सजा दे दी।

6 अगस्त (1945)

हिरोशिमा दिवस। मानवता के इतिहास में एक काला दिन। इसी दिन अमरीका ने जापान के हिरोशिमा शहर पर पहला अणु बम गिराया जिसमें लाखों लोग मारे गये, पूरा शहर तबाह हो गया, कई पीढ़ियों तक बच्चे विकलांग पैदा होते रहे। तीन दिन बाद 9 अगस्त को नागासाकी पर ऐसा ही बम गिराया गया।

9 अगस्त (1942)

अगस्त क्रान्ति दिवस। सारा कांग्रेसी नेतृत्व गिरफ्तार था। पर नौजवानों के नेतृत्व में जनता सड़कों पर उमड़ पड़ी। बच्चे-बच्चे की जुबान पर था—'अंग्रेजों भारत छोड़ो!' ब्रिटिश हुकूमत की जड़ें काँप गई। देश के कई हिस्सों में हफ्तों तक ब्रिटिश शासन को उखाड़कर आज़ाद सरकार कायम रही।

11 अगस्त (1908)

खुदीराम बोस का शहादत दिवस। बंगाल के इस युवा क्रान्तिकारी को ब्रिटिश साम्राज्यवादी हुकूमत ने फाँसी की सजा दे दी थी। इस बहादुर इंक़लाबी की उम्र उस वक़्त महज 19 वर्ष की थी। आज़ादी के दीवाने खुदीराम बोस ने हँसते-हँसते फाँसी का फन्दा चूम लिया।

15 अगस्त (1947)

स्वतंत्रता दिवस। हज़ारों-हज़ार लोगों की कुर्बानियों और जनता के लम्बे संघर्ष के बाद इसी दिन देश को आज़ादी मिली। लेकिन यह आज़ादी अधूरी है। सच्ची आज़ादी तब मिलेगी जब सबको शिक्षा, रोजगार और बराबरी का दर्जा मिलेगा।

24 अगस्त (1908)

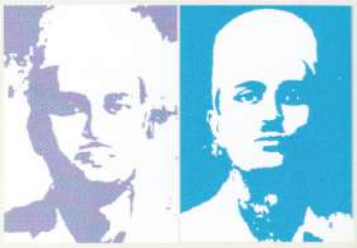

शहीदे आज़म भगतसिंह के अनन्य सहयोगी, अमर शहीद शिवराम हरि राजगुरु (राजगुरु के नाम से विख्यात) का जन्म पूना (महाराष्ट्र) के खेड़ा (वर्तमान में राजगुरु नगर) में हुआ था।

28 अगस्त (1828)

महान रूसी उपन्यासकार, 'युद्ध और शान्ति', 'आन्ना कारेनिना', 'पुनरुत्थान' जैसे विख्यात उपन्यासों के रचयिता लेव तोलस्तोय का जन्मदिवस।

29 अगस्त (1979)

प्रसिद्ध बांग्ला क्रान्तिकारी कवि नज़रूल इस्लाम की पुण्यतिथि।

13 सितम्बर (1930)

यतीन्द्रनाथ दास का शहादत दिवस। ब्रिटिश हुकूमत की जेल में राजनीतिक बन्दियों के अधिकारों के लिए अनशन करते हुए सरकार पर दबाव डालने के लिए पानी पीना तक छोड़ दिया। 63 दिन के अनशन के बाद यतीन्द्र ने अपनी जान की कुर्बानी दे दी।

16 सितम्बर (1904)

क्रान्तिकारी वीर सपूत शहीद महावीर सिंह का जन्म एटा जिला (उत्तर प्रदेश) के शाहपुर टहला में हुआ था।

25 सितम्बर (1881)

चीन के महान लेखक लू शुन का जन्मदिवस।

28 सितम्बर (1907)

शहीदे आज़म भगतसिंह का जन्मदिवस।

कोंपल

त्रैमासिक, वर्ष 1, अंक 3
जुलाई-सितम्बर 2014

संस्थापक
(स्व.) कमला पाण्डेय

सम्पादक
गीतिका

सज्जा
रामबाबू

सम्पादकीय कार्यालय
डी-68, निरालानगर
लखनऊ-226020
फोन : 0522-2786782

इस अंक का मूल्य : 20 रुपये
वार्षिक सदस्यता : 100 रुपये
(डाक व्यय सहित)
आजीवन सदस्यता : 2000 रुपये

स्वत्वाधिकारी अनुराग ट्रस्ट के लिए गीतिका द्वारा डी-68, निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित तथा लक्ष्मी ऑफसेट प्रेस, इन्दिरानगर, लखनऊ से मुद्रित।

सम्पादन एवं प्रकाशन पूर्णतः स्वैच्छिक तथा अवैतनिक

इस अंक में

हमारी बात / तुम्हारी बात 4

कहानियाँ

भोंबोल सरदार (तीसरी किस्त) - खगेन्द्र नाथ मित्र 5

सफेद गुड़– सर्वेश्वरदयाल सक्सेना 9

कबूतर ने चिट्ठी पहुँचाई 13

मौसम की भविष्यवक्ता बिल्ली 15

नेवला साँप की जान क्यों लेता है – बुशमैन कथा 21

चमगादड़ रात में क्यों उड़ता है – जुलू कथा 23

चूहा और मैं – हरिशंकर परसाई 26

गिरगिट का सपना – मोहन राकेश 28

नन्हे आर्थर का सूरज – हद्याक ग्युलनज़रयान 32

हम सूरज को देख सकते हैं – मिकोला गिल 35

उत्कृष्ट कलाकार – कैरल मूर 37

विज्ञान

कॉसमॉस – कार्ल सागान 16

गतिविधियाँ

अनुराग पुस्तकालय में फिल्म शो का आयोजन 40

कार्टून – जब ज़ेब्रा राम दंग रह गये 42

हमारी बात

प्यारे बच्चो,

'कोंपल' का यह तीसरा अंक तुम्हारे हाथों में है। इस बार हमने इसे 'कहानी विशेषांक' का रूप देने की कोशिश की है। अपने देश और दुनिया के कई देशों की कुछ मज़ेदार कहानियाँ हम तुम्हारे लिए लेकर आये हैं। बंगला के प्रसिद्ध लेखक खगेन्द्र नाथ मित्र की लम्बी कहानी 'भोम्बोल सरदार' को हम किस्तों में छाप रहे हैं। इसके अलावा हिन्दी के प्रसिद्ध लेखकों हरिशंकर परसाई, मोहन राकेश और सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की रचनाएँ भी तुम्हारे लिए प्रस्तुत हैं। हमें ज़रूर बताना कि तुम्हें ये कैसी लगीं।

इस बार हम बच्चों की रचनाएँ और चित्र जगह की कमी की वजह से नहीं दे पा रहे हैं। अगले अंक में 'नन्हीं कलम' और 'बाल कूची' कॉलम फिर से शुरू हो जायेंगे। अपने मज़ेदार अनुभवों और अपनी सोच को शब्दों या रेखाओं के ज़रिए काग़ज़ पर उतारो और हमारे पास भेजो। हम इन्तज़ार करेंगे।

– तुम्हारी दीदी

तुम्हारी बात

मेरी बेटी अब आठ साल की है। वह जब बहुत छोटी थी तब से मैं उसे 'अनुराग' की कहानियाँ पढ़कर सुनाती रही हूँ। अब वह खुद से पढ़ती है। उसे 'कोंपल' भी अच्छी लगी। लेकिन उसकी शिकायत है और मैं भी उससे सहमत हूँ कि इसमें तस्वीरें ज़्यादा होनी चाहिए और इसके पन्नों पर कुछ रंग भी होने चाहिए। अगर हो सके तो इसकी कोशिश कीजिये।

– मानसी चित्रा, रोहिणी, दिल्ली

मेरी बनायी पेंटिंग 'कोंपल' में क्यों नहीं छपती है? अगर अच्छी नहीं है तो हमको बताइये कि अच्छी पेंटिंग कैसे बनायें।

– चाँद, गोरखपुर

मेरे स्कूल की लायब्रेरी में 'कोंपल' पत्रिका मैंने पढ़ी। मुझे बहुत अच्छी लगी। मैंने टीचर जी से कहा है कि मैं इसको अपने घर पर मँगाना चाहती हूँ। मैं अपने दोस्तों के साथ बैठकर इसको पढ़ूँगी।

– मुस्कान, मानसा, पंजाब

मेरी कालोनी के बच्चों को टीवी देखना ज़्यादा अच्छा लगता है। कोई कोंपल नहीं पढ़ता है। मैं क्या करूँ?

– हिमांशु सिंह, हल्द्वानी

भोंबोल सरदार

(तीसरी किस्त)

राहों पर

खगेन्द्र नाथ मित्र

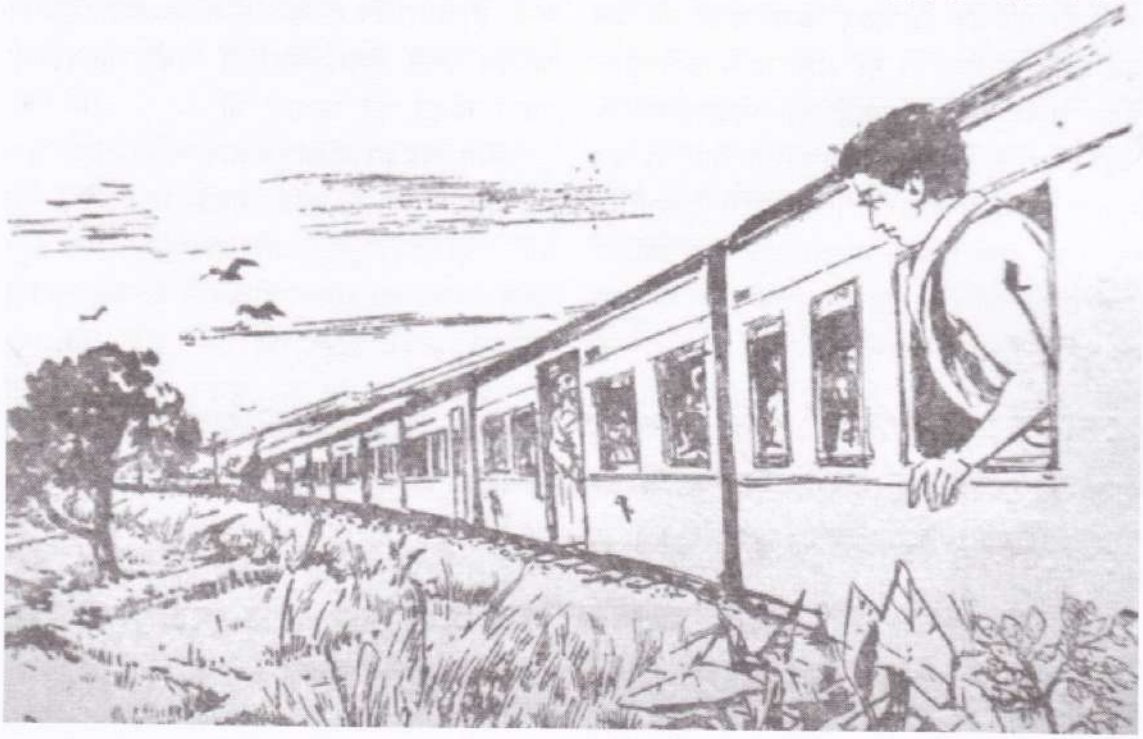

सामने ही ग्वाल-टोला। अकसर घी, मक्खन और गोबर की मिली-जुली महक से पूरा इलाका गुलजार हो जाता है। ग्वालों के घरों के पीछे से रेल का रास्ता गुजरता है। फुलु ग्वाले के घर के करीब होकर जाने पर दूरी कुछ कम हो जाती है।

चलते-चलते भोंबेल ने देख कि फुलु के घर के आँगन के लटकन के पेड़ के नीचे फुलु और उसका भाई हरि एक विशाल भगोने में दूध मथ रहे हैं-आवाज आ रही है मस्मस, मस्मस्! मिट्टी के घर के बरामदे में जल रही किरासन की ढिबरी के धुएँ से, आँगन भर गया है। अरे, ढिबरी के पास बैठा हुआ लड़का तो फुलु का बेटा यदु है! यदु भोंबोल के कक्षा में ही पढ़ता है। कभी भी पढ़कर नहीं आता है और हर रोज कनैठी खाता है। कर क्या रहा है जोदोआ, भोबोल ने बाड़े के पास जाकर दरार पर आँखे टिकाकर देखा कि यदु बाँस के डंडे के सिरे से भार लटकाने के लिए रस्सी बाँध रहा है। भोंबोल

की इच्छा हुई कि यदु को एक बार पुकारे। यदु ने एक दिन उसे मक्खन की एक डली दी थी। पर अभी उसका बाप मौजूद है। बड़ा शैतान है उसका बाप उसे मक्खन तो खाने नहीं ही देगा, उल्टे अभी पकड़ कर पूछताछ शुरू करेगा। नहीं चाहिए मक्खन। वह लाइन की ओर बढ़ चला। रास्ता गुमटी से जाकर मिलता है। गुमटी के लोहे के गेट पर लगे बत्ती की लाल रोशनी दिखने लगी है। गेट बंद है। जरूर किसी गाड़ी के आने का समय हो गया है। पर अभी तो कोई गाड़ी है नहीं। शायद कोई मालगाड़ी हो। भोंबोल गेट पर चढ़ गया। कुछ दूर तक दोनों ओर तार से घेरा गया है, बीच से होकर रेल की पटरी गुजरती है। लाइन के दोनों किनारे धारदार कुश की झाड़ियाँ और उसके बीच से खिले हुए लम्बे-लम्बे काश के फूलों के गुच्छे। अभी तो अँधेरे में कुछ नजर नहीं आ रहा है। पर दिन में रुपहले पंखों की तरह जब वे हवा में डोलते हैं तो बहुत सुंदर लगते हैं। भोंबोल को एक बार मन किया कि लाइन पकड़कर स्टेशन चला जाय। स्टेशन भी कोई अधिक दूरी पर नहीं है। सिग्नलों की रोशनी के बिन्दुओं को देखने से लग रहा है कि कुछ एक हरे और लाल तारे धरती पर उतर आये है। पर रात को लाइन पर अक्सर साँप सोया हुआ रहता है। कुछ दिन पहले एक बड़ा गेंहुवन साँप रेलगाड़ी से कट गया था। तभी उसके कानों को साँप की फुफकार जैसी आवाज आयी, आवाज भौट के जंगलों से आ रही थी। क्या सचमुच साँप ही है या और कुछ। फिर से भोंबोल गेट पर चढ़कर इत्मीनान से पैरों को दोनों ओर लटकाकर बैठ गया और नजरों को तेज कर भौट के जंगलों को देखने लगा। पर अँधेरे में कुछ भी नजर नहीं आया। आवाज भी अब बंद हो गई थी। कान अब मेढक और झिंगुर की आवाज की ओर सचेत हो गये।

फिर भी भोंबोल नीचे उतरने की हिम्मत जुटा नहीं पा रहा था। क्या पता साँप ठीक गेट के नीचे आ गया हो। साँप को भगाने के लिए भोंबोल ने कई बार ताली बजायी। लोग कहते हैं कि आवाज करने से साँप भाग जाते हैं। फिर कान लगाकर सुनने लगा, नहीं – वह आवाज अब बंद हो चुकी है। यदि साँप रहा भी होगा तो चला गया है। पर फिर यह कैसी चरमराहट की आवाज आने लगी, साथ में थके जानवर के श्वास छोड़ने की आवाज भी ?

उसने मुड़कर देखा, सामने के गेट के इस पार एक बैलगाड़ी आकर रुकी, मानो कोई भूत की गाड़ी हो। गुमटी की रोशनी से बैलों की आँखें चमक रही थी। गाड़ीवान ने आवाज लगायी – जरा गेट तो खोल भाई।

गुमटी का कमरा इस समय बंद था। गुमटी वाला शायद भात खाने घर गया होगा। कौन गाड़ीवान के लिए गेट खोलेगा? लाइन के इस पार बैलगाड़ी है? उसके बाद जुलाहों की बस्ती। गुमटीवाला ठहरा छिरू जुलाहे का बाप चयनदिद। उसका एक हाथ केहुनी तक कटा हुआ था। भोंबोल को वह पहचानता है।

गाड़ी को देखकर भोंबोल की हिम्मत जागी। पर साथ-साथ एक डर भी था, कहीं छिरू के बाप से सामना न हो जाय, और वह अभी भोंबोल के घर में खबर पहुँचा दे। गेट से उतरकर उसने लाइन पार की और कच्चा रास्ता पकड़ कर चल दिया।

दोपहर को बारिश हुई थी। रास्ते में भी कहीं-कहीं पानी भरा हुआ है। भोंबोल स्टेशन की ओर चल रहा था। चलते-चलते बार-बार इसके पैर कीचड़ और गीली मिट्टी में फँस रहे थे। एक सियार उसकी देह से आकर लगभग टकराया

और बेतहाशा भागा। जुलाहे के दो कुत्ते उसका पीछा कर रहे थे। सियार के भागते ही कुत्तों ने अब भोंबोल पर धावा बोल दिया।

क्या मुश्किल है! पर इन कुत्तों की हिम्मत घर से बीस हाथ तक ही टिकती है। वे एक दूरी पर आकर रुक गये और लगातार भौंकने लगे। भोंबोल ने इसकी परवाह नहीं की, कच्चे रास्ते को छोड़कर अब वह बड़े रास्ते से चलने लगा। स्टेशन अब काफी नजदीक था। बाहर वाली खाने की दुकानें और छोटे-मोटे होटल दिखने लगे थे।

स्टेशन पहुँचकर भोंबोल कुछ देर तक प्लेटफार्म पर इधर-उधर टहलता रहा। वह किसी गाड़ी का वक्त नहीं था। प्लेटफॉर्म अँधेरा था। दो एक यात्री अपने बोझ को सिरहाना बना इधर-उधर लेटे हुये थे। कोई-कोई बीड़ी पीते और खाँसते हुए बतिया रहे थे।

एक पानवाले छोकरे की नजर भोंबोल पर टिकी। उसने पूछा -"कौन है बे तू?" भोंबोल चेहरा तमतमा कर बोला-"तू कौन है बे?"

- "पहले तू बता, तू है कौन?''

-"चोप!एक मुक्के से दाँत तोड़ देंगे''

लड़ाई अब शुरू होने ही वाली थी। भोंबोल की आँखे लाल हो गयी थीं। वह मुक्का तान कर तैयार खड़ा था।

पासा पलट चुका था, पानवाला चीखा 'अरे मार डाला,' और चीखते हुए स्टेशन के बाहर भाग गया।

लड़ाई का मैदान लड़ाई शुरू होने के पहले ही खाली हो गया था, सामने एक लकड़ी का बक्सा रखा हुआ था। भोंबोल उस पर चढ़कर दोनों पैर लटकाकर बैठ गया।

अब वह घर नहीं लौटेगा। दो बजे रात को एक गाड़ी है, कलकत्ते के लिए। गाड़ी से वह कलकत्ता जायेगा, फिर वहाँ से टाटानगर। टाटानगर में भोंबोल का एक दोस्त जितेन रहता है।

जितेन पिछले साल स्कूल से टीसी लेकर अपने पिताजी के साथ टाटानगर चला गया था। जितेन ने उसे टाटानगर के कारखाने के बारे में कितनी ही कहानियाँ सुनायी है। कारखाने में भोंबोल जरूर कोई काम ढूँढ़ लेगा। उसकी देह में ताकत की कोई कमी नहीं है। वह धमाधम हथौड़ा चलाकर रोज, लोहा-लकड़ी ढोयेगा - और फिर तो एक दिन एक मोटरगाड़ी, एक पनडुब्बी जहाज, या एक हवाई जहाज भी क्यों नहीं, बना ही लेगा। आखिर मजदूर और इंजीनियर लोग ही तो विश्वकर्मा होते है। विश्वकर्मा और है ही कौन?

खैर, फिलहाल कुछ खाने को मिले तो राहत मिले, कल सवेरे के बाद उसने खाया ही कब, उस समय भी चाचा का खौफ उसे पेटभर कर खाने नहीं दिया। शाम को पंडित से मिला मुठ्टी भर बतासा। पास में एक भी पैसा नहीं। रहता तो मिठाई की दुकान में जाकर दो-चार चमचम खा लेता। सूखे खोवे का चूर लगा हुआ चमचम इतना स्वादिष्ट लगता है न!

भोंबोल अब बक्से से उतरकर फिर इधर-उधर कुछ देर तक टहलता रहा। स्टेशन धीरे-धीरे शांत होता जा रहा था। रेल के बाबू दफ्तर के खटमल भरे टेबुलों पर बिस्तर लगाकर सो रहे हैं। कहीं से खास कोई आवाज नहीं आ रही है। अब लोगों का चलना फिरना भी बंद हो चुका है। बाहर रास्ते पर सितार की मीठी धुन सुनाई देने लगी।

भोंबोल बाहर निकला, देखा कि छादेक (सादिक) व्यापारी की आढ़त के बगल के पीपल तले कुछ लोग धूनी रमाये बैठे है, आग के उस पार दो साधु और इधर कुछ और लोग, लगता है साधुओं के चेले हैं। रोशनी भी है,

अँधेरा भी – लगता है, भूतों की मजलिस लगी हुई है।

साधुओं में से एक सितार बजा रहा है। दूसरा साधु चिमटा बजाकर संगत कर रहा है। सितार की धुन को भोंबोल पहचानता है। इसको स्कूल का माली कभी-कभी गाता है।

रास्ता पार कर भोंबोल धीरे-धीरे वहाँ जाकर खड़ा हुआ। धुन तो मीठी थी, पर लोगों के चेहरे नहीं – देखने से ही लग रहा था – गुंडे हैं। पर गुंडों से उसे क्या डर? उसके पास तो कोई एक कौड़ी भी नहीं है।

एक ने भोंबोल को खड़ा देख लिया। कई बार तीखी नजरों से उसे घूरता रहा, पर बोला कुछ नहीं। भोंबोल चुपचाप खड़ा होकर सितार की धुन को सुनने लगा। आधा घंटा बजने के बाद सितार

रुका। लेकिन भोंबोल के दिमाग पर धुन तबतक सवार हो चुकी थी। गाने के बोल भोंबोल को याद नहीं थे, उसके दिमाग में जो धुन गूँज रही थी, वह थी रिमझिम काँटा काँटा, रिमझिम काँटा-काँटा।

चिमटा बजाने वाले साधु ने अपनी झोली से दो पकी हुई नाशपाती निकालकर भोंबोल को दिया और बोला – "इसे लेकर अब यहाँ से भागो बेटा।'' एक दूसरा चेला जो धूनी से एक अंगारे को निकालकर चिलम पर रख रहा था, धमकी दिया - "भाग बे!"

भोंबोल भी अब वहाँ ठहरना नहीं चाहता था। ये लोग खूनी गुंडे हैं, भोंबोल को अब शक नहीं रह गया था। दोनों नाशपाती को लेकर वह फिर स्टेशन के अहाते में चला गया। बक्सा अभी तक वहीं रखा हुआ था। भोंबोल फिर उस पर बैठ गया और दोनों नाशपाती को बारी-बारी से सूँघा, एकदम पकी हुई पुष्ट नाशपातियाँ थीं। आकार में भी बड़ी। सितार की धुन की नकल करते हुए उसने एक बार -"रिमझिम काँटा काँटा" गुनगुनाया और एक नाशपाती पर दाँत गड़ा दिये। एक को खाने के बाद, उसे लालच हुआ, दूसरे को भी खा ले। पर फिर कल के लिये क्या बचेगा। इसे रख ही दिया जाय। उसे कमीज़ के छोर में बाँधकर, वह समय देखने गया।

रात के ठीक बारह बज रहे थे। गाड़ी को आने में अभी भी दो घंटे की देर थी। इस दो घंटे वह सो सकता है। लेकिन अगर नींद गाढ़ी हो गयी और गाड़ी निकल गयी, तब? पर भला नींद गाढ़ी क्यों होने लगी? गाड़ी आते ही, लोगों का शोरगुल, इंजन की भाप छोड़ने की आवाज, गाड़ी का दरवाजा पटकने की धमधम आवाज – इसके बाद भी उसकी नींद नहीं खुलेगी? नींद तो टूटेगी ही। उसने किताब में पढ़ा है - नेपोलियन घोड़े की पीठ पर सवार ही पाँच-दस मिनट सो लेता था। बीच लडाई में भी उसकी नींद गाढ़ी ही होती थी, यह सब उसकी किताब में लिखा है। उसने देखा है - क्लास में जगत सर भी पढ़ाते पढ़ाते टूटे हुए आड़ तले कुर्सी पर ही बैठकर सो जाते हैं, उनकी नाक भी बजने लगती है, पर घंटी बजी नहीं कि जगत सर जाग जाते हैं। कभी भी इसका अपवाद नहीं होता है। तो फिर भला भोंबोल कैसे सोया हुआ रह जायेगा? वह सीधा बक्से के ऊपर लम्बी तानकर लेट गया।

शुरू में मच्छरों के काटने ने उसे सोने नहीं दिया। कान में पींपीं की आवाज, हाथ पैर पर काट की चुभन ने उसे बेचैन कर दिया। नाक के ठीक सिरे पर एक मच्छर ने ऐसा काटा कि नाक अभी भी लहर रही है। धोती को ही ओढ़कर मरी हुई झींगा मछली की तरह वह घुटने मोड़कर गुड़ी-मुड़ी होकर सो गया। फिर भी मच्छर दल हतोत्साहित नहीं हुआ। कब उसकी आँख लग गयी उसे नहीं पता। एक समय अचानक उसकी आँखे खुलीं और उसने देखा, चारों ओर लोगों की भागदौड़ और हल्ला-गुल्ला – सामने एक ट्रेन खड़ी है। इंजन से आवाज आ रही है-सों-सों।

घबड़ाकर उठकर वह बक्से से उतरा और दौड़कर सामने लगे डिब्बे में चढ़ गया।

साथ ही साथ इंजन की सीटी के साथ गाड़ी भी चल पड़ी।

अगली किस्त
"सालुक डांगा में"

बंगला से अनुवाद : **देवाशीष बराट**

कहानी

सफेद गुड़

• सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

दुकान पर सफेद गुड़ रखा था। दुर्लभ था। उसे देखकर बार-बार उसके मुँह से पानी आ जाता था। आते-जाते वह ललचाई नजरों से गुड़ की ओर देखता, फिर मन मसोसकर रह जाता। आखिरकार उसने हिम्मत की और घर जाकर माँ से कहा। माँ बैठी फटे कपड़े सिल रही थी। उसने आँख उठाकर कुछ देर दीन दृष्टि से उसकी ओर देखा, फिर ऊपर आसमान की ओर देखने लगी और बड़ी देर तक देखती रही। बोली कुछ नहीं। वह चुपचाप माँ के पास से चला गया। जब माँ के पास पैसे नहीं होते तो वह इसी तरह देखती थी। वह यह जानता था।

वह बहुत देर गुमसुम बैठा रहा, उसे अपने वे साथी याद आ रहे थे जो उसे चिढ़-चिढ़ाकर गुड़ खा रहे थे। ज्यों-ज्यों उसे उनकी याद आती, उसके भीतर गुड़ खाने की लालसा और तेज होती जाती। एकाध बार उसके मन में माँ के बटुए से पैसे चुराने का भी ख्याल आया। यह ख्याल आते ही वह अपने को धिक्कारने लगा और इस बुरे ख्याल के लिए ईश्वर से क्षमा माँगने लगा।

उसकी उम्र ग्यारह साल की थी। घर में माँ के सिवा कोई नहीं था। हालाँकि माँ कहती थी कि वे अकेले नहीं हैं, उनके साथ ईश्वर है। वह चूँकि माँ का कहना मानता था इसलिए उसकी यह बात भी मान लेता था। लेकिन ईश्वर के होने

का उसे पता नहीं चलता था। माँ उसे तरह-तरह से ईश्वर के होने का यकीन दिलाती। जब वह बीमार होती, तकलीफ में कराहती तो ईश्वर का नाम लेती और जब अच्छी हो जाती तो ईश्वर को धन्यवाद देती। दोनों घंटों आँख बंद कर बैठते। बिना पूजा किए हुए वे खाना नहीं खाते। वह रोज सुबह-शाम अपनी छोटी-सी घंटी लेकर, पालथी मारकर संध्या करता। उसे संध्या के सारे मंत्र याद थे, उस समय से ही जब उसकी जबान तोतली थी। अब तो यह साफ बोलने लगा था।

वे एक छोटे-से कस्बे में रहते थे। माँ एक स्कूल में अध्यापिका थी। बचपन से ही वह ऐसी कहानियाँ माँ के सुनता था। जिनमें यह बताया जाता था कि ईश्वर अपने भक्तों का कितना ख्याल रखते हैं। और हर बार ऐसी कहानी सुनकर वह ईश्वर का सच्चा भक्त बनने की इच्छा से भर जाता। दूसरे भी उसके पीठ ठोंकते, और कहते, 'बड़ा शरीफ लड़का है। ईश्वर उसकी मदद करेगा।' वह भी जानता कि ईश्वर उसकी मदद करेगा। लेकिन कभी इसका कोई सबूत उसे नहीं मिला था।

उस दिन जब वह सफेद गुड़ खाने के लिए बेचैन था तब उसे ईश्वर याद आया। उसने खुद को धिक्कारा, उसे माँ से पैसे माँगकर माँ को दुखी नहीं करना चाहिए था। ईश्वर किस दिन के लिए है? ईश्वर का ख्याल आते ही वह खुश हो गया। उसके अंदर एक विचित्र-सा उत्साह आ गया। क्योंकि वह जनता था कि ईश्वर सबसे अधिक ताकतवर है। वह सब जगह है और सब कुछ कर सकता है। ऐसा कुछ भी नहीं जो वह न कर सके। तो क्या वह थोड़ा-सा गुड़ नहीं दिला सकता? उसे जो कि बचपन से ही उसकी पूजा करता आ रहा है और जिसने कभी कोई बुरा काम नहीं किया। कभी चोरी नहीं की, किसी को सताया नहीं। उसने सोचा और इस भाव से भर उठा कि ईश्वर जरूर उसे गुड़ देगा।

वह तेजी से उठा और घर के अकेले कोने में पूजा करने बैठ गया। तभी माँ ने आवाज दी, 'बेटा, पूजा से उठने के बाद बाजार से नमक ले आना।'

उसे लगा जैसे ईश्वर ने उसकी पुकार सुन ली है। वरना पूजा पर बैठते ही माँ उसे बाजार जाने को क्यों कहती। उसने ध्यान लगाकर पूजा की, फिर पैसे और झोला लेकर बाजार की ओर चल दिया।

घर से निकलते ही उसे खेत पार करने पड़ते थे, फिर गाँव की गली जो ईंटों की बनी हुई हुई थी, फिर बाजार की ओर चल दिया।

उस समय शाम हो गई थी। सूरज डूब रहा था। वह खेतों में चला जा रहा था, आँखें आधी बंद किए, ईश्वर पर ध्यान लगाए और संध्या के मंत्रों को बार-बार दोहराते हुए। उसे याद नहीं उसने कितनी देर में खेत पार किए, लेकिन जब वह गाँव की ईंटों की गली में आया तब सूरज डूब चुका था और अंधेरा छाने लगा था। लोग अपने-अपने घरों में थे। धुआँ उठ रहा था। चौपाए खामोश खड़े थे। नीम सर्दी के दिन थे।

उसने पूरी आँख खोलकर बाहर का कुछ भी देखने की कोशिश नहीं की। वह अपने भीतर देख रहा था जहाँ अँधेरे में एक झिलमिलाता प्रकाश था। ईश्वर का प्रकाश और उस प्रकाश के आगे वह आँखें बंद किए मंत्रपाठ कर रहा था।

अचानक उसे अजान की आवाज सुनाई दी। गाँव के सिरे पर एक छोटी-सी मस्जिद थी। उसने थोड़ी-सी आँखें खोलकर देखा। अँधेरा काफी गाढ़ा हो गया था। मस्जिद के एक कमरे बराबर दालान में लोग नमाज के लिए इकट्ठा होने लगे थे। उसके भीतर एक लहर-सी आई।

उसके पैर ठिठक गए। आँखें पूरी बंद हो गई। वह मन-ही-मन कह उठा, 'ईश्वर यदि तुम हो और सच्चे मन से तुम्हारी पूजा की है तो मुझे पैसे दो, यहीं इसी वक्त।'

वह वहीं गली में बैठ गया। उसने जमीन पर हाथ रखा। जमीन ठंडी थी। हाथों के नीचे कुछ चिकना-सा महसूस हुआ। उल्लास की बिजली-सी उसके शरीर में दौड़ गई। उसने आँखें खोलकर देखा। अँधेरे में उसकी हथेली में अठन्नी दमक रही थी। वह मन-ही-मन ईश्वर के चरणों में लोट गया। खुशी के समुद्र में झूलने लगा। उसने उस अठन्नी को बार-बार निहारा, चूमा, माथे से लगाया। क्योंकि वह एक अठन्नी ही नहीं था। उस गरीब पर ईश्वर की कृपा थी। उसकी सारी पूजा और सच्चाई का ईश्वर की ओर से इनाम था। ईश्वर जरूर है, उसका मन चिल्लाने लगा। भगवान मैं तुम्हारा बहुत छोटा-सा सेवक हूँ। मैं सारा जीवन तुम्हारी भक्ति करूँगा। मुझे कभी मत बिसराना। उलटे-सीधे शब्दों में उसने मन-ही-मन कहा और बाजार की तरफ दौड़ पड़ा। अठन्नी उसने जोर से हथेली में दबा रखी थी।

जब वह दुकान पर पहुँचा तो लालटेन जल चुकी थी। पंसारी उसके सामने हाथ जोड़े बैठा था। थोड़ी देर में उसने आँख खोली और पूछा, 'क्या चाहिए?'

उसने हथेली में चमकती अठन्नी देखी और बोला, 'आठ आने का सफेद गुड़।'

यह कहकर उसने गर्व से अठन्नी पंसारी की तरफ गद्दी पर फेंकी। पर यह गद्दी पर न गिर उसके सामने रखे धनिए के डिब्बे में गिर गई। पंसारी ने उसे डिब्बे में टटोला पर उसमें अठन्नी नहीं मिली। एक छोटा-सा खपड़ा (चिकना पत्थर)

जरूर था जिसे पंसारी ने निकाल कर फेंक दिया।

उसका चेहरा एकदम से काला पड़ गया। सिर घूम गया। जैसे शरीर का खून निकाल गया हो। आँखें छलछला आई।

'कहाँ गई अठन्नी!' पंसारी ने भी हैरत से कहा।

उसे लगा जैसे वह रो पड़ेगा। देखते-देखते सबसे ताकतवर ईश्वर की उसके सामने मौत हो गई थी। उसने मरे हाथों से जेब से पैसे निकाले, नमक लिया और जाने लगा।

दुकानदार ने उसे उदास देखकर कहा, 'गुड़ ले लो, पैसे फिर आ जाएँगे।'

'नहीं।' उसने कहा और रो पड़ा।

'अच्छा पैसे मत देना। मेरी ओर से थोड़ा-सा गुड़ ले लो।' दुकानदार ने प्यार से कहा और एक टुकड़ा तोड़कर उसे देने लगा। उसने मुँह फिरा लिया और चल दिया। उसने ईश्वर से माँगा था, दुकानदार से नहीं। दूसरों की दया उसे नहीं चाहिए।

लेकिन अब वह ईश्वर से कुछ नहीं माँगता।

दो चीनी लघुकथाएँ

कबूतर ने चिट्ठी पहुँचाई

जाड़ा आया। भारी बर्फ पड़ी और सफेद बर्फ से सभी पेड़ों पर जैसे सफेद टोपियाँ टँग गई। पहाड़, मैदान हर जगह बर्फ की चादर बिछ गई। जमीन बर्फ से ढककर एकदम सफेद हो गयी। उसमें दो-चार जगह पैरों के निशान दिखायी पड़ते थे। पक्षी भी अपने-अपने घोंसले में छिप गये - वे बहुत कम बाहर निकलते थे। चीड़ दादा को जंगल के दोस्तों को बहुत याद आई, उसने कुशल-मंगल पूछने के लिए उन्हें एक पत्र लिखा। इसी समय एक नन्हा भूरा कबूतर वहाँ आया। चीड़ दादा ने पत्र पहुँचाने के लिए नन्हें भूरे कबूतर से अनुरोध किया।

''चीड़ दादा, आप बिल्कुल निश्चित रहिए, मैं आपका पत्र पहुँचा दूँगा और उन लोगों की खबर ले आऊँगा।'' नन्हा भूरा कबूतर अपने पंख फड़फड़ाकर उड़ गया।

नन्हा भूरा कबूतर सबसे पहले काले भालू के घर पहुँचा।

वह दरवाजा खटखटाते हुए बोला, ''अपना द्वार खोलो, भालू भाई, तुम्हारा पत्र आया है।''

बड़ी देर तक कोई जवाब नहीं आया।

नन्हे भूरे कबूतर ने खिड़की से अन्दर झाँककर देखा, कमरे में बिल्कुल अँधेरा छाया हुआ था। भालू भाई बिना हिले-डुले वहाँ ''हू-हा हू-हा'' खर्राटे भर रहा था। उसे जगाने में कोई उपाय न देख नन्हे भूरे कबूतर को दूसरी जगह जाना पड़ा।

नन्हा भूरा कबूतर उड़कर साही के घर पहुँचा।

वह दरवाजे पर खटखट करते हुए बोला,

''खोलो अपना दरवाजा, नन्ही साही, तुम्हारा पत्र आया है।''

बड़ी देर तक कोई उत्तर नहीं आया।

नन्हे भूरे कबूतर ने अपना सिर उठाकर देखा, कमरे में घुप्प अँधेरा था। नन्हीं साही ऐसे सिकुड़कर सो रही थी, मानो कोई काँटेदार गेंद रखी हो। वह एकदम स्थिर थी। लाचार होकर नन्हे भूरे कबूतर को फिर दूसरी जगह जाना पड़ा।

नन्हा भूरा कबूतर चमगादड़ के घर पहुँचा।

दरवाजा खटखटाते हुए वह बोला, ''खोलो अपना द्वारा, चमगादड़, तुम्हारा पत्र आया है।''

बड़ी देर तक कोई उत्तर नहीं आया।

नन्हे भूरे कबूतर ने खिड़की के खाने से अन्दर झाँककर देखा, कमरे के अन्दर झीनी रोशनी नज़र आई। नन्हा चमगादड़ अपने दोनों पंजों से पेड़ की टहनी से उल्टा लटका हुआ था, मानो वह योगाभ्यास कर रहा हो। कोई चारा न देखकर नन्हा भूरा कबूतर उड़कर दूसरी जगह चला गया।

नन्हा कबूतर जंगल के बाहर निकला और उड़कर नदी के किनारे नन्हे कछुए के घर पहुँचा।

वह द्वार पर दस्तक देकर बोला, ''दरवाजा खोलो, नन्हे कछुए, तुम्हारी चिट्ठी आई है।''

काफी देर तक कोई आवाज नहीं आई।

नन्हे भूरे कबूतर ने बिल के अन्दर देखा, अन्दर अँधेरा छाया हुआ था। नन्हा कछुआ अपने सिर, पंजों व पूँछ को अपने खोल के अन्दर समेटकर लेटा हुआ था। वह औंधे कटोर की तरह जमीन पर पड़ा था। वह हिलडुल भी नहीं रहा था। नन्हें भूरे कबूतर को कोई तरकीब न सूझी और वह वहाँ से उड़ चला।

नन्हा भूरा कबूतर बड़ी चिन्ता में पड़ गया।

उसने सोचा अवश्य ही सबके सब बीमार पड़ गये हैं। वह शीघ्र ही डाक्टर कठफोड़वे को बुलाने गया।

कठफोड़वा कड़ाके की सर्दी में भी हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठा था। अभी वह पेड़ों के कीड़े निकालकर रोगोपचार करने जाने ही वाला था कि नन्हा भूरा कबूतर तेज उड़ान भरकर आया और बोला, ''गजब हुआ! वे... सब बीमार हो गये।''

डाक्टर कठफोड़वा हँसते हुए बोला, ''नन्हें भूरे कबूतर, तुम नहीं जानते, वे लोग जाड़े की नींद सो रहे हैं। जाड़े आने से पहले ही उन्होंने जाड़ा बिताने की पूरी तैयारी कर ली है और पूरी सर्दियों में न तो वे खाना खायेंगे और न ही वे हिलेंगे-डुलेंगे। वे ठण्ड या भूख से नहीं मरेंगे। अगले वसंत के आने पर वे फिर जाग उठेंगे।''

यह सुनकर नन्हें भूरे कबूतर की चिन्ता समाप्त हुई। वह खुश होकर बोला, ''अरे, ऐसी बात है! वे जाड़े की नींद सो रहे हैं।''

कठफोड़वा बोला, ''हाँ, वे जाड़े की नींद में हैं।''

नन्हा भूरा कबूतर खुशी-खुशी वापस लौट गया और उसने पत्र पहुँचाने की पूरी कहानी चीड़ दादा को सुनाई।

मौसम की भविष्यवक्ता बिल्ली

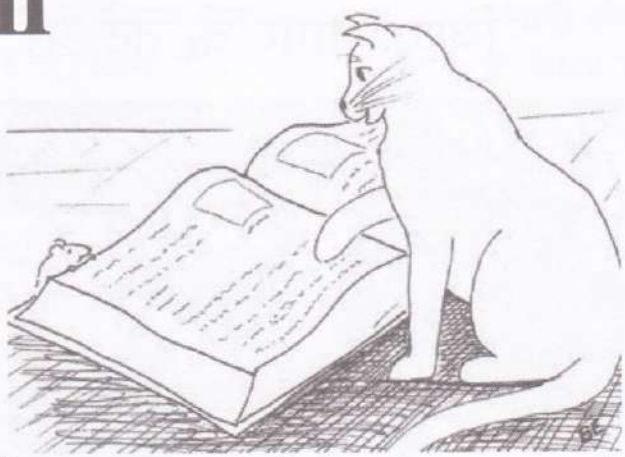

च्वेनच्वेन नामक बच्चों के घर में एक बड़ी चितकबरी बिल्ली थी। वह बिल्ली छींट के कपड़े पहनती थी। चूहे को पकड़ने में वह बड़ी पारंगत थी और सफाई पर बहुत ध्यान देती थी। वह लोगों के साथ बड़े सम्मान के साथ पेश आती थी। रोज च्वेनच्वेन के स्कूल जाने के समय वह ''म्याऊँ-म्याऊँ'' करती हुई उसे विदा करती थी। कक्षा खत्म होने के बाद जब च्वेनच्वेन घर वापस लौटती तो वह सबसे पहले आकर च्वेनच्वेन का स्वागत करते हुए ऐसे ''म्याऊँ-म्याऊँ'' बोलती मानो वह उससे कुशल-क्षेम पूछ रही हो।

कुछ समय बाद बड़ी चितकबरी ने दो नन्हीं चितकबरी बिल्लियों को जन्म दिया। दोनों नन्हीं चितकबरी बिल्लियाँ बड़ी प्यारी थीं और वे दिन भर ''म्याऊँ-म्याऊँ'' बोलती रहती थीं।

एक दिन च्वेनच्वेन कसरत की कक्षा में जाने के लिए सुबह-सबेरे ही उठी। उसे नन्हीं बिल्लियों की छींक सुनाई पड़ी, मानो उन्हें जुकाम हो गया हो। उसने फिर बड़ी चितकबरी बिल्ली पर नजर डाली तो ऐसा लगा कि बड़ी चितकबरी बिल्ली को अपनी नन्हीं बिल्लियों की बिल्कुल परवाह न हो। वह जीभ से अपने शरीर के बाल साफ करने में व्यस्त थी।

तभी च्वेनच्वेन की माँ पास आकर बोली, ''च्वेनच्वेन, आज स्कूल जाते समय तुम्हें अपने साथ छाता ले जाना चाहिए। बिल्लियों ने बारिश होने की भविष्यवाणी की है।

साफ आसमान की ओर देखते हुए च्वेनच्वेन ने आश्चर्य के साथ पूछा, ''मौसम इतना अच्छा है, बिल्लियों को कैसे मालूम हो सकता है कि बारिश होने वाली है?''

माँ हँसते हुए बोली, ''क्योंकि बारिश होने से पहले वायु में एक तरह की नमी होती है, जिसका अनुभव हमने पहले बिल्लियों को हो जाता है और वे छींकने व जीभ से अपने बाल साफ करने के जरिए मौसम की भविष्यवाणी करती हैं।''

सचमुच ही स्कूल जाने के रास्ते में मूसलाधार बारिश हुई। च्वेनच्वेन ने अपने साथ छाता रखा था, इसलिए वह बारिश में नहीं भीगी।

च्वेनच्वेन स्कूल से घर वापस आई। उसे देखकर बड़ी चितकबरी बिल्ली और दो नन्हीं चितकबरी बिल्लियों ने ''म्याऊँ-म्याऊँ'' करती हुई उसका स्वागत किया। च्वेनच्वेन उनके शरीर पर हाथ फेरते हुए बोली, ''तुम तो मौसम की नन्ही भविष्यवक्ता हो। आज तो तुम्हें धन्यवाद देना चाहिए।''

विज्ञान

कॉसमॉस

प्रसिद्ध खगोलविज्ञानी और लेखक कार्ल सागान की विश्व प्रसिद्ध रचना के अंश

विश्व सागर के तट पर

विश्व, माने यह सब कुछ - जहाँ कहीं कुछ भी है, या जब कभी कुछ भी था, या जो कुछ कभी भी होगा, वह सारा कुछ विश्व है। विश्व के बारे में हमारी हल्की सी भी जानकारी हमें आलोड़ित करती है, बदन में एक सिहरन सी होती है, आवाज़ रुंध सी जाती है, एक क्षीण बोध, किसी गहरे विस्मृति से जागने का, किसी ऊँचाई से गिरने का। हम ग़ौर करते हैं कि हम सबसे बड़े रहस्य की ओर अग्रसर हैं।

विश्व कि व्याप्ति और अस्तित्वकाल मनुष्य

की सामान्य समझ के परे है। विस्तार और नित्यता के बीच कहीं खोया हुआ है, हमारा यह छोटा सा ग्रहीय घर - ऐसा लग ही सकता है कि वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अधिकांश मानवीय स्वार्थ नगण्य, यहाँ तक कि तुच्छ हैं। लेकिन फिर भी हमारी प्रजाति नवीन है, उत्सुक है, साहसी है और विशाल संभावनाशील है। पिछले कुछ हज़ार सालों में इसने विश्व और उसमें हमारे स्थान के बारे में ऐसी खोजें की हैं जो विस्मयकारी हैं, ऐसी अनेक खोजें जिनका हमें कोई आभास भी न था, ऐसे अनेकों अन्वेषण हुए हैं जिनके बारे में सोचने से ही हमारा मन आनन्द से भर उठता है। ये हमें याद दिलाते हैं कि, हमारे विकास में विस्मयबोध अंतर्निहित है, चीजों को समझने में हमारी खुशी है, ज्ञान हमारे अस्तित्व की पूर्वशर्त है। मेरा मानना है, कि हमारा भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम इस विश्व को, जिसमें हम सुबह के आसमान में एक धूलकण के समान तैर रहे हैं, कितने अच्छे से जानते हैं।

उन खोजों में संशय और सपने दोनों ही ज़रूरी थे। कल्पना की उड़ान अक्सर ही हमें ऐसी दुनिया में ले जाती है जिनका कोई अस्तित्व ही नहीं है। पर, कल्पनाओं के बगैर हम कहीं आगे भी नहीं बढ़ सकते। संशय हमें कोरी कल्पना और वस्तुगत तथ्य में भेद कराता है, हमारे अनुमान को परखता है। यह विश्व, अपने वस्तुगत सत्य के सौंदर्य में, अपने अंतर्संबंधों के उत्कर्ष में, अपनी अंतर्निहित रहस्यमयता में, अपरिमेय रूप से समृद्ध है।

यह धरातल विश्व महासागर की वेलाभूमि है। इसी पर खड़े होकर हमने हमारा अधिकांश ज्ञान हासिल किया है। कुछ लम्हे पहले ही हमने सामने के समुद्र में कुछ डग भरे हैं, हमारे पैर की उंगलियाँ, अधिक से अधिक एड़ियाँ ही भीग पाई हैं। पानी हमें सुकून दे रहा है, सागर हमें बुला रहा है। हमारे अस्तित्व के एक अंश को यह पता है, कि यही है वह दुनिया जहाँ से हम आये हैं। एक अप्रतिरोध्य इच्छा होती है कि लौट चलें। मेरे हिसाब से इन चाहतों को स्पर्धा नहीं कहा जाना चाहिए, भले ही, हो न हो इनसे देवताओं को परेशानी होती हो।

विश्व का विस्तार इतना बड़ा है कि दूरी मापने की पारंपरिक इकाइयों की, जो धरती पर उपयोगी हैं, जैसे मीटर या मील, यहाँ कोई प्रासंगिकता नहीं है। हम यहाँ दूरियों को प्रकाश के वेग के जरिए मापते हैं। एक सेकण्ड में प्रकाश लगभग तीन लाख किलोमीटर की दूरी तय करता है या धरती का साढ़े सात बार चक्कर लगा सकता है। प्रकाश के लिए सूर्य से पृथ्वी 8 मिनट का रास्ता है। हम कह सकते हैं कि सूर्य हमसे 8 प्रकाश-मिनट दूर है। एक साल में प्रकाश सौ खरब किलोमीटर की दूरी तय करता है। दूरी की इस इकाई, अर्थात प्रकाश द्वारा एक साल में तय की गई दूरी, को एक प्रकाश वर्ष कहते हैं। यह समय नहीं, दूरी की माप है - एक अतिविशाल दूरी।

धरती एक ठौर है। यह किसी भी तरह से एक मात्र ठौर-ठिकाना नहीं है। यह कोई ऐसी जगह भी नहीं है जिसे मिसाल के रूप में पेश किया जा सके (कि विश्व में तमाम ऐसी जगहें हैं जैसे कि यह धरती)। किसी भी ग्रह, तारे या मन्दाकिनी को ठौर के एक नमूने के रूप में पेश नहीं किया जा सकता। असीम, शीतल, सर्वव्यापी शून्यता में एक मात्र प्रातिनिधिक इलाका है, मन्दाकिनियों के बीच के चिरंतन रात्रि वाला अंतराल, यह एक ऐसी वीरान और अंजान जगह

है कि उसकी तुलना में ग्रह, तारे और मन्दाकिनियाँ यातनामय रूप से दुर्लभ और प्यारे लगते हैं। यदि हम किसी ग्रह के करीब पहुँचने के उद्देश्य से, बिना किसी चुनाव के विश्व के किसी भी अंचल में भटकते हुए प्रवेश करें तो कितनी बार भटकने पर हमारी भेंट किसी ग्रह से हो सकती है? दो-तीन बार? - नहीं! सौ बार? - नहीं! लाखों बार? - नहीं! अरबों बार? - बिल्कुल नहीं! एक अरब में तो एक के बाद नौ शून्य आते हैं, एक के बाद तैंतीस शून्य बैठाने से जो संख्या मिलती है, उतनी कोशिशों के बाद ही आप शायद अपने को किसी ग्रह पर या उसके करीब पायेंगे! रोजमर्रे की जिन्दगी में ऐसी उम्मीदें विवशकारी हैं, उन्हें पालकर जिया नहीं जा सकता है। दुनियाएँ (या आप चाहे तो कहे इलाके) अनमोल हैं।

दूर-दूर तक फैली मन्दाकिनियों के बीच जो विशाल शून्य हैं वहाँ कहीं खड़े होकर यदि हम अपनी निगाहें फैलाएँ तो प्रकाश की लहरों पर फेन की तरह तैरते अगणित निष्प्रभ, हल्की रोशनी की शाखाएँ, बाहें दिखेंगी, वे ही मन्दाकिनियाँ हैं। इनमें से कुछ एकल पथिक हैं, पर अधिकांश कबीलाई समूहों में युग-युग से विश्व के अँधेरे में बहती जा रही हैं। हमारे सामने विश्व अपने पूरे फैलाव में पड़ा हुआ है। मान लीजिए हम लोग अभी निहारिकाओं के उस संसार में हैं जो पृथ्वी से करीब 8 अरब प्रकाश-वर्ष दूर है, और दूसरी ओर लगभग इतने ही दूरी पर है ज्ञात विश्व की सीमा। एक मन्दाकिनी में गैस, धूल और तारे होते हैं, अरबों-अरब तारे। हर तारा किसी का सूर्य हो सकता है। जैसे कि एक तारा हमारा सूर्य है। मन्दाकिनी के भीतर तारे हैं, दुनियाएँ हैं, और संभावना है कि ये प्राणवान वस्तुओं से, बुद्धिमान प्राणियों से, या फिर अंतरिक्ष का भ्रमण करने वाली सभ्यताओं से भरे पड़े हैं। पर इतनी दूरी से एक मन्दाकिनी मुझे प्यारी-प्यारी चीजों की याद दिला रही है, जैसे एक समुद्री सीप या फिर एक प्रवाल-कण, विश्व महासागर में लीन प्रकृति के युगों-युगों के श्रम की पैदावार।

लगभग सौ अरब है मन्दाकिनियों की संख्या, और हर एक में औसतन सौ अरब तारे हैं। सभी मन्दाकिनियों में कुल मिलाकर शायद उतने ही ग्रह हैं जितने कि तारे - लगभग एक खरब-खरब। यह संख्या इतनी बड़ी है फिर ऐसा कैसे हो सकता है कि पूरे विश्व के केवल एक साधारण से तारे, सूर्य के साथ ही एक आबाद ग्रह है? हम लोगों में आखिर ऐसी क्या खास बात है, कि विश्व के किसी भूले हुए कोने में रहने वाले हम मनुष्य ही इतने भाग्यशाली हों? मुझे तो लगता है कि यह विश्व प्राण से भरपूर है। पर हम इससे अभी तक अनजान हैं। हम लोगों ने तो बस अभी ही अपनी खोजी यात्रा शुरू की है। याद कीजिए हम लोग अभी पृथ्वी से 8 अरब प्रकाश वर्ष की दूरी पर हैं। हम पर बहुत दबाव है कि हम मन्दाकिनियों के उस गुच्छे को भी खोज पाएँ जिस पर हमारी अपनी मन्दाकिनी (आकाशगंगा) जड़ी हुई है। सूर्य या पृथ्वी को खोज पाना दूर की रही। सूर्य की परावर्तित रोशनी से आलोकित वह पथरीला और धातुई कण, वह एकमात्र ग्रह जिसके आबाद होने के बारे में हमें सन्देह नहीं है, इतनी दूरी से अभी पूर्ण रूप से खोया हुआ है।

पर इस समय हमारी सैर हमें वहाँ ले आई है जिसे पृथ्वी पर रहने वाले खगोलशास्त्री मन्दाकिनियों का स्थानीय समूह कहना पसंद करते हैं। लगभग बीस मन्दाकिनियों से बने हुए

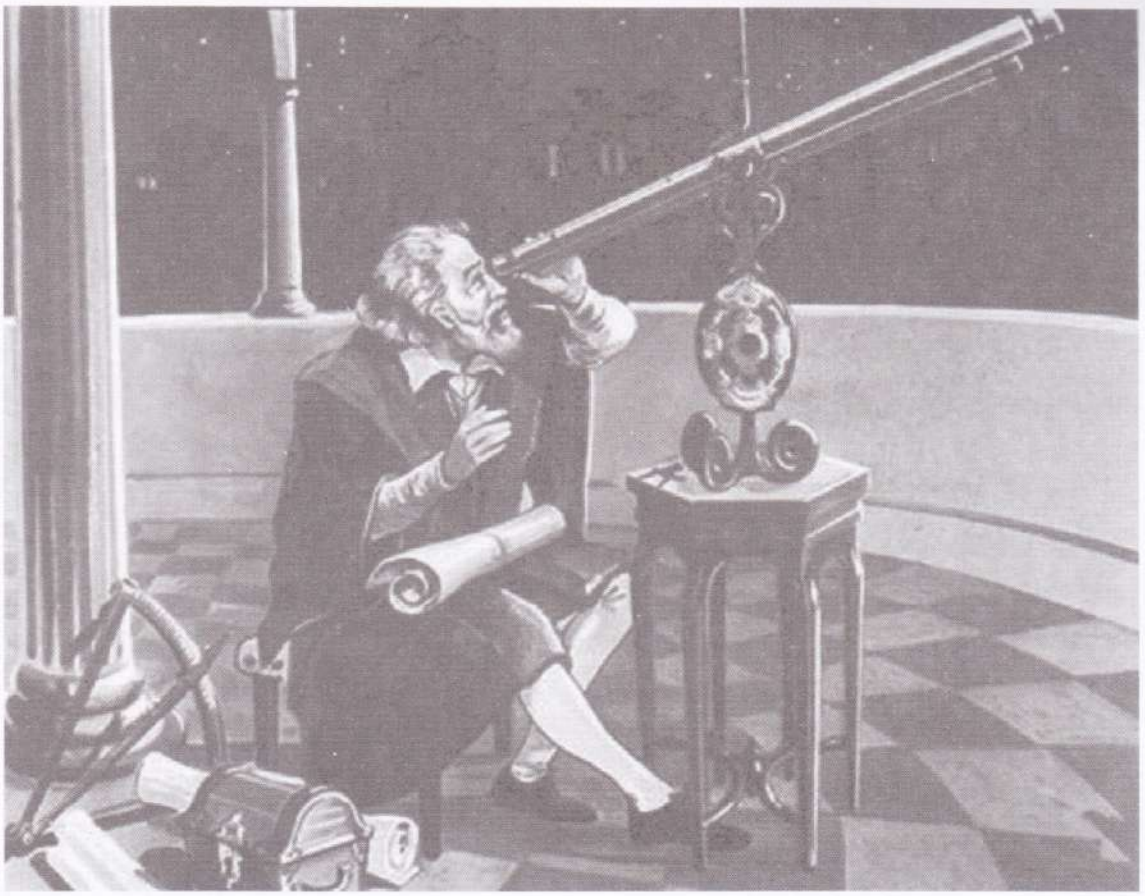

इस समूह का विस्तार एक करोड़ प्रकाश वर्ष से कुछ कम है। बिखरा हुआ, छुपा हुआ एक समूह, जिसे अपने को अभिव्यक्त करने की कोइ व्याग्रता नहीं है। इस समूह में एक मन्दाकिनी है M-31, जो धरती से देवयानी (एंड्रोमीडा) नक्षत्रमंडली में दिखता है। दूसरी कुंडलाकार मन्दाकिनियों की तरह यह भी तारे, गैस और धूल की एक विशाल घिरनी है। इसके दो छोटे सहचर हैं, दो बौनी दीर्घवृत्तीय मन्दाकिनियाँ। जिस नियम को मानने वाला गुरुत्वाकर्षण हमें फर्श के साथ रखना चाहता है, ठीक उसी नियम से बँधा गुरुत्वाकर्षण इन दोनो मन्दाकिनियों को M-31 से बाँधे रखता है। प्रकृति के नियम पूरे विश्व में एक जैसे हैं। हम लोग अभी पृथ्वी से 20 लाख प्रकाश वर्ष दूर है।

M-31 से परे, करीब वैसी ही एक मन्दाकिनी है - हमारी अपनी मन्दाकिनी (आकाशगंगा), जिसकी सर्पिल बाँहें धीरे-धीरे घूम रही हैं, 25 करोड़ साल में एक बार। घर से अब हम 40 हजार प्रकाश वर्ष की दूरी पर हैं, हम लोग अपनी आकाशगंगा के केन्द्र की ओर लगातार गिरते जा रहे हैं। यदि धरती का पता लगाना हो तो हमें मुड़ना होगा, और तब हमारा रास्ता आकाशगंगा के एक सुदूर बाहरी अंचल की ओर होगा, एक ऐसी जगह जो उसकी एक बाहरी सर्पिल बाँह के छोर में छुपी हुई है। यहाँ, इन सर्पिल बाँहों के बीच से भी हमारे सामने एक विह्वलकारी दृश्य होगा - तारों के जुलूस, ज्योतिर्मय

तारों की अनगिनत कतारें, कुछ साबुन के बुलबुलों के समान कोमल, पर इतने बड़े कि उसमें दस हजार सूर्य या दस खरब धरती समा जायें, कुछ बस एक छोटे शहर के समान, पर सीसे (एक भारी धातु) से हजार खरब गुणा अधिक घनत्व वाले। कुछ तारे अकेले हैं जैसे सूर्य, अधिकतर के साथी हैं, ज्यादातर जोड़ों में हैं, जहाँ दो तारे एक-दूसरे का चक्कर काट रहे हैं। फिर तीन-तीन तारों वाले समूहों से लेकर कुछ दर्जन तारों वाले ढीले-ढाले समूह भी हैं, और ऐसे ही बढ़ते हुए, अंत तक तो दसियों लाख सूर्य से जगमगाते हुए दैत्याकार तारों के गुच्छे भी हैं। कुछ जोड़ों में तारे इतने करीब हैं कि एक-दूसरे को छू रहे हैं और एक से दूसरे में उस पदार्थ का, जिससे वे तारे बने हुए हैं, अनवरत प्रवाह चलता रहता है - पर अधिकांश स्थिति में यह जोड़ेवाले तारे एक-दूसरे से उतने ही दूर हैं जितना कि बृहस्पति सूर्य से। कुछ तारे जिन्हें अंग्रेजी में सुपरनोवा कहते हैं, उनकी ही उज्ज्वलता, उस पूरी मन्दाकिनी के समान होती है, जिसमें कि वे रहते हैं। कुछ दूसरे - ब्लैकहोल - इतने अँधेरे हैं कि कुछ किलोमीटर दूर से भी नहीं दिखते हैं। कुछ की टिमटिमाहट बेतरतीब है तो कुछ की अचूक लयबद्ध। कुछ के घूमने में एक गरिमामय धीरता है, तो कुछ के घूमने की तीव्रता ने उन्हें फैला दिया है। ज्यादातर के विकिरण दृश्य प्रकाश और तापीय तरंगों में होते हैं - लेकिन ऐसे भी हैं जो एक्स-किरणें, या फिर रेडियो तरंगों के ऊर्जस्वी स्रोत हैं। नीले तारे गर्मजोशी से भरे नौजवान तारे हैं, पीले वाले अधेड़ उम्र के तारे हैं, लाल तारे प्राय: ही प्रौढ़ या मरणोन्मुख होते हैं, छोटे-छोटे श्वेत या कृष्ण तारों की मौत की घंटी बज चुकी है। हमारी आकाशगंगा में लगभग चार खरब तारे हैं, इसमें हर तरह के तारे हैं। एक जटिल और नियमबद्ध गरिमा के साथ गतिमान इन सारे तारों में पृथ्वी के निवासी केवल एक ही को (यानी सूर्य को) निकट से जानते हैं।

हर तारा अपने सहचरों के साथ अंतरिक्ष में एक-एक टापू के समान है, अपने पड़ोसियों से प्रकाश वर्षों की दूरियों से अलग ।

मैं इन असंख्य दुनियाओं में ज्ञान के ज्योतिष्कों में विकसित होते प्राणियों की कल्पना कर पाता हूँ, शुरुआत में जिनमें से हरेक ने बस अपने छोटे से ग्रह और कुछ एक सूर्यों को ही सब कुछ समझा। हम सभी अलग-थलग बड़े हुए, बहुत धीरे-धीरे ही हम विश्व के बारे में जान पाते हैं।

बहुत सारे तारे शायद लाखों प्राणहीन प्रस्तरमय छोटी-छोटी दुनियाओं से घिरे हुए हैं जो अपने उत्पत्ति के शुरुआती दौर में ही जम गए। संभव है, बहुत सारे तारों की हमारी तरह ही ग्रहमंडली हों, बाहरी अंचल में दैत्याकार गैसीय वलयधारी ग्रह, साथ में बर्फीले उपग्रहों को लिये हुए, और तारे के पास के भीतरी अंचल में छोटे उष्ण, श्वेत-नीलीम मेघाच्छादित दुनियाएँ। उनमें से किसी में बुद्धिमान प्राणियों का उद्‌भव हुआ हो, जो अपने विराट इंजीनियरिंग उद्यमों से ग्रह की सतह को नये रूप में ढालने में लगे हुए हों। विश्व के आँगन में ये हमारे भाई-बहन हैं - क्या वे हमसे बिल्कुल भिन्न हैं, उनका रूप, जैव रसायन, उनका तंत्रिका-जीवविज्ञान, उनका इतिहास, राजनीति, विज्ञान, टेक्नोलॉजी, ललित कला, संगीत, विश्वास, दर्शन? कभी वह दिन आयेगा जब हम उन्हें जान पायेंगे।

(क्रमश:)

प्रस्तुति: **देवाशीष बराट**

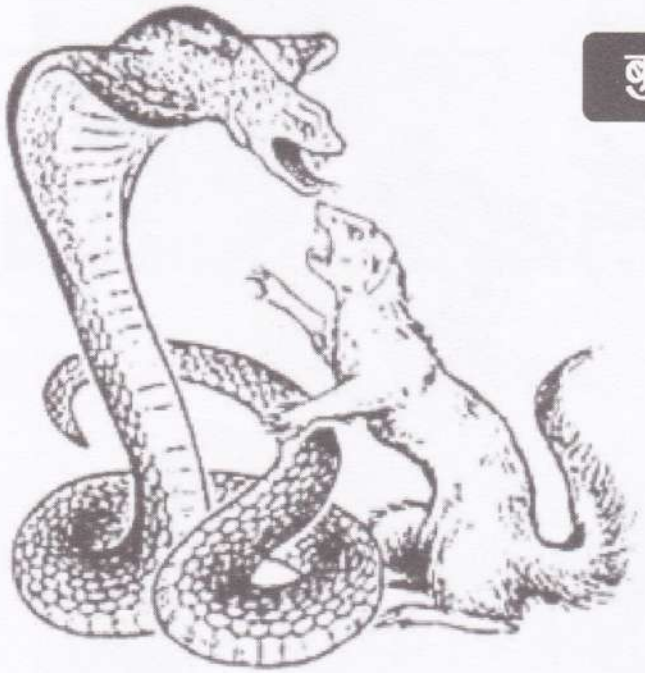

बुशमैन कबीले की कथा

नेवला साँप की जान क्यों लेता है

पुराने जमाने में नेवला और कातिब चिड़िया के बीच बहुत यारी थी। एक दिन दोनों एक झँखाड़ से गुजर रहे थे कि उनका सामना एक विशाल अजगर से हो गया।

अजगर ने नेवले से अपने साथ चलने को कहा। उसने कोई खास चीज़ देखी थी और नेवले को भी दिखाना चाहता था। कातिब चिड़िया ने बताया कि उसे गर्मी लग रही है। उसका मन कर रहा था पास के पोखर पर जाकर नहाने और पानी पीने का। कातिब चिड़िया ने यह बताकर अपने दोस्त नेवले से विदा ली और उड़ चली।

अब नेवला और साँप दोनों साथ-साथ आगे चले। काफी दूर चलते रहने के बाद वे जमीन पर बने एक खतोने के पास पहुँचे। उस खतोने में कुछ अण्डे थे। साँप जानता था कि यह खतोना कातिब चिड़िया का है पर उसने नेवले से इसे छिपाये रखा।

साँप ने नेवले से पूछा, "क्या तुमने कभी अण्डा चखा है?"

नेवले ने कुछ बेकली से कहा, "नहीं, साँप, मैंने तो आज तक अण्डा चखा ही नहीं।"

तिकड़मी साँप ने कहा, "अण्डे के स्वाद का क्या कहना! चखकर देखो तो सही!" उसने एक अण्डे की खाल तोड़ भी दी।

अब साँप और नेवला दोनों अण्डे खाने लगे। नेवला मान गया कि इससे पहले उसने इतनी लजीज कोई दूसरी चीज नहीं खाई थी। अभी उन्होंने अन्तिम अण्डे को गटका ही था कि उन्होंने देखा कि कातिब चिड़िया उनकी ओर उड़ी आ रही है।

अब फितरती साँप ने कहा, "नेवला तो तुम्हारे सारे प्यारे अण्डे चट कर गया।"

कातिब चिड़िया को इस बात पर बहुत

गुस्सा आया कि उसके दोस्त नेवले ने ही उसके साथ धोखा किया। अब उसने देखा कि अंडे की जर्दी तो साँप के मुँह के आसपास भी लगी है।

कातिब चिड़िया ने आपा खोते हुए कहा, ''तुम दोनों ने मेरे अण्डे खा लिए।''

नेवले ने समझाया कि साँप ने किस तरह उसे बहका दिया था। इसके बाद कातिब चिड़िया और नेवला उस धोखेबाज साँप के पीछे पड़ गये और उसकी जान लेकर ही छोड़ा।

नेवले ने कातिब चिड़िया से कहा, ''आज से हम दोनों साँप पर नज़र रखेंगे और उसकी जान ले लेंगे।'' यह कौल वे आज तक निभाते आ रहे हैं।

इसके बाद कातिब चिड़िया की समझ में आ गया कि अपना घोंसला किसी कँटीली झाड़ी की सबसे ऊपरी टहनी पर ही बनाना चाहिए जिससे जीवभक्षी उसके पास फटक तक न पायें। उसके बाद से वह जहाँ कहीं किसी साँप को देख लेती है उसे अपने पंजों और सुर्ख पाँवों से दबाकर मार डालती है और उसे चट कर जाती है।

नेवला भी साँप को खा जाता है। बिजली से भी फुर्तीला और तेज-से-तेज साँप से भी तेज होने के कारण वह साँप को मार ही डालता है।

पर नेवले को अण्डे की लज्जत कभी न भूली। अण्डा मिल जाये तो वह उसे खाने को हमेशा तैयार रहता है।

चमगादड़ रात में क्यों उड़ता है

ज़ुलू कबीले की कथा

पुराने जमाने की बात है। उस समय चमगादड़ और नेवले में बहुत याराना था। दिन के दिन वे एक साथ शिकार करते रहते। वे झाड़ियों और पेड़ों के बीच भागते फिरते और उन्हें बहुत उम्दा चीजें खाने को मिल जाया करतीं। शाम होने पर वे बारी-बारी खाना पकाते और साथ बैठकर खाते।

लेकिन ऊपरी दोस्ती के बाद भी चमगादड़ नेवले से भीतर-भीतर खार खाता था। सच तो यह है कि वह उससे नफरत करता था। एक शाम को जब वे साथ बैठे खाना खा रहे थे, नेवले ने पूछा, ''यह बताओ कि तुम्हारा खाना हर बार मेरे खाने से अधिक चटपटा क्यों होता है? क्या तुम कल मुझे अपने पकाने का तरीका दिखाओगे?''

चमगादड़ राजी तो हो गया पर उसके दिमाग़ में एक बुरा ख्याल आने लगा। दूसरे दिन चमगादड़ ने रोज की तरह ही खाना बनाया। चमगादड़ बहुत अच्छा रसोइया था, इसलिए खाना तो बहुत चटपटा बनना ही था। इसके बाद उसने अपना बर्तन छिपा दिया और एक दूसरे बर्तन में गुनगुना पानी भर दिया। कुछ ही देर बाद नेवला आया और उसने अपने दोस्त को दुआ-सलाम किया। वह रसोई सीखने के लिए बहुत उतावला था।

उस दुष्ट चमगादड़ ने कहा, ''देखते जाओ। तुम्हें पता चल जायेगा कि मैं हर बार खाना परोसने से पहले उबलते हुए खाने में अपने को उबाल देता हूँ। मेरा माँस बहुत जायकेदार है इसलिए इसका असर मेरे पकाये हुए खाने में भी आ जाता है।'

नेवले के देखते-देखते उसने उस बर्तन के ऊपर से ढक्कन हटाया और उसी में कूद पड़ा। नेवले के अचरज का तो ठिकाना न रहा। चमगादड़ ने जोर से कहा, ''देखो, अब शोरबा उबल रहा है।'' नेवले की नजर जरा सी चूकी कि उसी बीच चमगादड़ उछलकर बाहर आ

गया। उसने बर्तन को ढक दिया और जो लजीज खाना उसने पहले तैयार कर रखा था उसे परोस दिया।

चमगादड़ ने इसकी सफाई देते हुए कहा कि सबसे जायकेदार खाना तब बनता है जब वह अपने बर्तन काम में लाता है। नेवले पर उसकी धाक जम गई और उसने कहा कि अगले दिन वह भी लजीज खाना बनाने की कोशिश करेगा।

अगली शाम, नेवले ने खूब सारी आग जलाई। अब क्या था, खाना धीमे-धीमे पकने लगा। फिर जैसा चमगादड़ ने करके दिखाया था, नेवला उबलते शोरबे में कूद पड़ा। वह बुरी तरह झुलस गया और उसके शरीर में जगह-जगह इतने फफोले पड़ गये कि देखकर भी डर लगता था।

अब नेवले को पता चला कि चमगादड़ ने उसके साथ धोखाधड़ी की है। वह क्रोध से आगबबूला होकर चमगादड़ पर यह सोचकर झपटा कि अब इसे ऐसा सबक सिखाऊँगा कि यह भी जिन्दगी भर याद रखेगा। अपनी ओर नेवले को आता देखकर चमगादड़ नेवले के गुस्से से डर गया और खिसककर रात के अँधेरे में चला गया। चमगादड़ एक पेड़ के कोटर में जा छिपा। नेवला तलाश करता थक गया पर उसका पता न चला।

नेवले के पूरे समूर पर सीझते हुए शोरबे में उबलने का निशान आज तक बना रह गया है। चमगादड़ आज तक नेवले से छिपता फिरता है। सिर्फ रात के समय भूख से बेचैन हो जाने पर ही वह खाने की तलाश में बाहर निकलता है। उसके बाद से चमगादड़ अपनी रसोई आग पर नहीं पकाता कि कहीं इससे उसका भेद न मालूम हो जाये। उसके बाद नेवला भी कभी आग के पास नहीं फटकता। उसे आज तक अपने झुलसने की बात याद है।

नेवलों के बारे में कुछ बातें

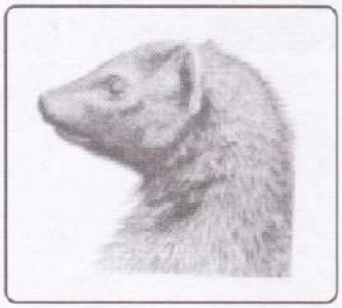

पहचान : नेवला परिवार के इस नन्हें जीव के पीठ के आधे भाग से पूँछ के मूल तक लम्बी काली धारियाँ होती हैं। पूँछ का सिरा काला होता है और इसकी लम्बाई पूरे शरीर की आधी होती है।

निवास : नेवले बहुत भिन्न परिवेशों में रह सकते हैं पर ये रेगिस्तानों या घने जंगलों में नहीं पाये जाते। इनके लिए पानी नहीं बल्कि वनस्पतियाँ और दीमकों की पुरानी बाँबी, जिसमें ये अपना बिल बनाते हैं, अधिक मानी रखती हैं।

आदतें : यह एक समूहजीवी जानवर हैं और झुण्ड बनाकर रहता है। इनके झुण्ड अलग-अलग आकारों के हो सकते हैं। अब तक सबसे बड़ा झुण्ड 75 नेवलों का दर्ज किया गया है।

इनका जत्था धूल निकलने के साथ ही बाहर निकल आता है और खाने की तलाश में जुट जाता है। खाने की तलाश करते समय पूरा जत्था दूर-दूर तक बिखर जाता है और इसके सदस्य आपस में ऊँची किलकिलाहट की आवाज में एक-दूसरे से सम्पर्क बनाये रहते हैं। यह आवाज काफी दूर तक सुनाई पड़ती है।

एक जत्थे का इलाका लगभग एक वर्ग

किलोमीटर तक फैला होता है। जत्थे के प्राणी अपने इलाके में आये किसी लट्ठे, पत्थर आदि पर अपनी गुदा की एक ग्रंथि से निकले वाली गंध से निशान छोड़ देते हैं। इस इलाके में कुछ अस्थायी ठिकाने होते हैं जहाँ खतरे का अंदेशा होने पर ये जानवर छिप जाते हैं। खतरा यदि गम्भीर हुआ तो धारीवाल नेवले किसी पेड़ या दीमकों की ऊँची बाँबी पर चढ़कर चारों ओर की पड़ताल भी करते हैं।

खतरे की हालत में नेवले एक ऊँची किलक भरते हैं और इसके साथ ही जो नेवला जहाँ होता है वहीं दुबक जाता है। कुछ नेवले अपने पूँछ का सहारा लेकर अपने पिछले दोनों पाँवों पर खड़े होकर चारों ओर की पड़ताल करते हैं। यदि खतरे की पुष्टि हो गई तो वे वहाँ से सबसे पास के ठिकाने में जाकर छिप जाते हैं।

इनका जत्था आर्डवार्क के छोड़े हुए बिलों को, खदरी हुई नालियों को और दीमक की पुरानी बाँबियों को ही अपना बिल बनाने के लिए काम में लाता है। ये अपने ठिकाने बलते रहते हैं पर जिस बिल से इन्हें खास लगाव होता है उसमें दुबारा भी बसेरा करते हैं।

आहार : धारीवाल नेवले कीड़े, गुबरैले, गोंजर, घोंघे, छोटे चूहे, छोटे साँप, बिच्छू, चिड़ियों के अण्डे और चूजे तथा फल खाते हैं। इनकी घ्राणशक्ति बहुत तेज होती है और इससे ये बहुत आसानी से यह पता लगा लेते हैं कि धरती के नीचे भी कोई कीड़ा या ढोला है या नहीं और यह पता चलते ही ये उसे खोदकर बाहर निकाल लेते हैं। यदि कोई नेवला बीमार पड़ जाये या बूढ़ा हो जाये तो जत्थे के दूसरे नेवले उसकी देखभाल करते हैं।

प्रजनन : एक जत्थे की बहुत-सी न्यौलियाँ एक साथ ही ताव में आती हैं। इससे गिरोह को यह लाभ होता है कि इसे किसी एक ही बिल के पास बहुत लम्बे समय तक नहीं रहना पड़ता।

बच्चे बिल के भीतर कक्ष बनाकर उसमें घास बिछाकर दिये जाते हैं।

जन्म के समय बच्चे अंधे होते हैं। उनके शरीर पर रोएँ नहीं होते। पर दो माह के बाद इन्हें दिखाई देने लगता है और ये हाथ-पाँव चलाने लगते हैं। कोई भी दुधारू नेवली सारे बच्चों को दूध पिलायेगी। जब जत्था आहार की तलाश में बाहर निकलेगा तो कोई-न-कोई बड़ा नेवला बच्चे की रखवाली के लिए बिल में ही रह जायेगा। माँ बिल के आसपास ही आहार की तलाश करेगी।

खतरे की हालत में पूरा जत्था बच्चों के बचाव का काम सँभालता है।

(दोनों अफ्रीकी कथाएँ नेशनल बुक ट्रस्ट से प्रकाशित **निक ग्रीव्स** की किताब 'जब शेर भी उड़ान भरता था' से साभार)

प्रजाति :
धारीवाल नेवला (नंशियो मुंगो)
झबरा, 6 से 60 तक के झुण्ड में रहता है

	नर	मादा
ऊँचाई	18 सेमी	18 सेमी
वजन	2 किग्रा	1.6 किग्रा
जन्म के समय वजन	200 ग्राम	200 ग्राम
दूध छोड़ने का समय	3-4 माह	3-4 माह
जवान होने का समय	12 माह	10 माह
गर्भकाल		60 दिन
बच्चों की संख्या	2-8	
आयु	5 साल	5 साल

व्यंग्य

चूहा और मैं

• हरिशंकर परसाई

चाहता तो लेख का शीर्षक "मैं और चूहा" रख सकता था। पर मेरा अहंकार इस चूहे ने नीचे कर दिया। जो मैं नहीं कर सकता, वह मेरे घर का यह चूहा कर लेता है। जो इस देश का सामान्य आदमी नहीं कर पाता, वह इस चूहे ने मेरे साथ करके बता दिया। इस घर में एक मोटा चूहा है। जब छोटे भाई की पत्नी थी, तब घर में खाना बनता था। इस बीच पारिवारिक दुर्घटनाओं-बहनोई की मृत्यु आदि के कारण हम लोग बाहर रहे। इस चूहे ने अपना अधिकार मान लिया था कि मुझे खाने को इसी घर में मिलेगा। ऐसा अधिकार आदमी भी अभी तक नहीं मान पाया। चूहे ने मान लिया है। लगभग पैंतालिस दिन घर बन्द रहा। मैं तब अकेला लौटा। घर खोला, तो देखा कि चूहे ने काफी क्रॉकरी फर्श पर गिराकर फोड़ डाली है। वह खाने की तलाश में भड़भड़ाता होगा। क्रॉकरी और डिब्बों में खाना तलाशता होगा। उसे खाना नहीं मिलता होगा, तो वह पड़ोस में कहीं कुछ खा लेता होगा और जीवित रहता होगा। पर घर उसने नहीं छोड़ा। उसने इसी घर को अपना घर मान लिया था। जब मैं घर में घुसा, बिजली जलाई तो मैंने देखा कि वह खुशी से चहकता हुआ यहाँ से वहाँ दौड़ रहा है। वह शायद समझ गया कि अब इस घर में खाना बनेगा, डिब्बे खुलेंगे और उसकी खुराक उसे मिलेगी।

दिन-भर वह आनन्द से सारे घर में घूमता रहा। मैं देख रहा था। उसके उल्लास से मुझे अच्छा ही लगा।

पर घर में खाना बनना शुरू नहीं हुआ। मैं

अकेला था। बहन के यहाँ जो पास में ही रहती है, दोपहर को भोजन कर लेता। रात को देर से खाता हूँ, तो बहन डब्बा भेज देती। खाकर मैं डब्बा बन्द करके रख देता। चूहाराम निराश हो रहे थे। सोचते होंगे यह कैसा घर है। आदमी आ गया है। रोशनी भी है। पर खाना नहीं बनता। खाना बनता तो कुछ बिखरे दाने या रोटी के टुकड़े उसे मिल जाते।

मुझे एक नया अनुभव हुआ। रात को चूहा बार-बार आता और सिर की तरफ मच्छरदानी पर चढ़कर कुलबुलाता। रात में कई बार मेरी नींद टूटती मैं उसे भगाता। पर थोड़ी देर बाद वह फिर आ जाता और सिर के पास हलचल करने लगता।

वह भूखा था। मगर उसे सिर और पाँव की समझ कैसे आई? वह मेरे पाँवों की तरफ गड़बड़ नहीं करता था। सीधे सिर की तरफ आता और हलचल करने लगता। एक दिन वह मच्छरदानी में घुस गया।

मैं बड़ा परेशान। क्या करूँ? इसे मारूँ और यह किसी अलमारी के नीचे मर गया, तो सड़ेगा और सारा घर दुर्गन्ध से भर जाएगा। फिर भारी अलमारी हटाकर इसे निकालना पड़ेगा।

चूहा दिन-भर भड़भड़ाता और रात को मुझे तंग करता। मुझे नींद आती, मगर चूहाराम मेरे सिर के पास भड़भड़ाने लगते।

आखिर एक दिन मुझे समझ में आया कि चूहे को खाना चाहिए। उसने इस घर को अपना घर मान लिया है। वह अपने अधिकारों के प्रति सचेत है। वह रात को मेरे सिरहाने आकर शायद यह कहता है - "क्यों, बे, तू आ गया है। भर-पेट खा रहा है, मगर मैं भूखा मर रहा हूँ मैं इस घर का सदस्य हूँ। मेरा भी हक है। मैं तेरी नींद हराम कर दूँगा। तब मैंने उसकी माँग पूरी करने की तरकीब निकाली।"

रात को मैंने भोजन का डब्बा खोला, तो पापड़ के कुछ टुकड़े यहाँ-वहाँ डाल दिए। चूहा कहीं से निकला और एक टुकड़ा उठाकर अलमारी के नीचे बैठकर खाने लगा। भोजन पूरा करने के बाद मैंने रोटी के कुछ टुकड़े फर्श पर बिखरा दिए। सुबह देखा कि वह सब खा गया है।

एक दिन बहन ने चावल के पापड़ भेजे। मैंने तीन-चार टुकड़े फर्श पर डाल दिए। चूहा आया, सूँघा और लौट गया। उसे चावल के पापड़ पसन्द नहीं। मैं चूहे की पसन्द से चमत्कृत रह गया। मैंने रोटी के कुछ टुकड़े डाल दिए। वह एक के बाद एक टुकड़ा लेकर जाने लगा।

अब यह रोजमर्रा का काम हो गया। मैं डब्बा खोलता, तो चूहा निकलकर देखने लगता। मैं एक-दो टुकड़े डाल देता। वह उठाकर ले जाता। पर इतने से उसकी भूख शान्त नहीं होती थी। मैं भोजन करके रोटी के टुकड़े फर्श पर डाल देता। वह रात को उन्हें खा लेता और सो जाता।

इधर मैं भी चैन की नींद सोता। चूहा मेरे सिर के पास गड़बड़ नहीं करता।

फिर वह कहीं से अपने एक भाई को ले आया। कहा होगा, "चल रे, मेरे साथ उस घर में। मैंने उस रोटीवाले को तंग करके, डरा के, खाना निकलवा लिया है। चल दोनों खाएँगे। उसका बाप हमें खाने को देगा। वरना हम उसकी नींद हराम कर देंगे। हमारा हक है।"

अब दोनों चूहाराम मजे में खा रहे हैं।

मगर मैं सोचता हूँ - आदमी क्या चूहे से भी बद्तर हो गया है? चूहा तो अपनी रोटी के हक के लिए मेरे सिर पर चढ़ जाता है, मेरी नींद हराम कर देता है।

इस देश का आदमी कब इस चूहे की तरह आचरण करेगा?

कहानी

गिरगिट का सपना

• मोहन राकेश

एक गिरगिट था। अच्छा, मोटा-ताजा। काफी हरे जंगल में रहता था। रहने के लिए एक घने पेड़ के नीचे अच्छी-सी जगह बना रखी थी उसने। खाने-पीने की कोई तकलीफ नहीं थी। आसपास जीव-जन्तु बहुत मिल जाते थे। फिर भी वह उदास रहता था। उसका ख्याल था कि उसे कुछ और होना चाहिए था। और हर चीज, हर जीव का अपना एक रंग था। पर उसका अपना कोई एक रंग था ही नहीं। थोड़ी देर पहले नीले थे, अब हरे हो गए। हरे से बैंगनी। बैंगनी से कत्थई। कत्थई से स्याह। यह भी कोई जिन्दगी थी! यह ठीक था कि इससे बचाव बहुत होता था। हर देखनेवाले को धोखा दिया जा सकता था। खतरे के वक्त जान बचाई जा सकती थी। शिकार की सुविधा भी इसी से थी। पर यह भी क्या कि अपनी कोई एक पहचान ही नहीं! सुबह उठे, तो कच्चे भुट्ठे की तरह पीले और रात को सोए तो भुने शकरकन्द की तरह काले! हर दो घण्टे में खुद अपने ही लिए अजनबी!

उसे अपने सिवा हर एक से ईर्ष्या होती थी। पास के बिल में एक साँप था। ऐसा बढ़िया लहरिया था उसकी खाल पर कि देखकर मजा आ जाता था! आसपास के सब चूहे-चमगादड़ उससे खौफ खाते थे। वह खुद भी उसे देखते ही दुम दबाकर भागता था। या मिट्टी के रंग में मिट्टी होकर पड़ रहता था। उसका ज्यादातर मन यही करता था कि वह गिरगिट न होकर साँप होता, तो कितना अच्छा था! जब मन आया, पेट के बल रेंग लिए। जब मन आया, कुण्डली मारी और फन उठाकर सीधे हो गए।

एक रात जब वह सोया, तो उसे ठीक से नींद नहीं आई। दो-चार कीड़े ज्यादा निगल लेने से बदहजमी हो गई थी। नींद लाने के लिए वह कई तरह से सीधा-उलटा हुआ, पर नींद नहीं आई। आँखों को धोखा देने के लिए उसने रंग भी कई बदल लिए, पर कोई फायदा नहीं हुआ। हलकी-सी ऊँघ आती, पर फिर वही बेचैनी। आखिर वह पास की झाड़ी में जाकर नींद लाने की एक पत्ती निगल आया। उस पत्ती की सिफारिश उसके एक और गिरगिट दोस्त ने की थी। पत्ती खाने की देर थी कि उसका सिर भारी होने लगा। लगने लगा कि उसका शरीर जमीन के अन्दर धँसता जा रहा है। थोड़ी ही देर में उसे महसूस हुआ जैसे किसी ने उसे जिन्दा जमीन में गाड़ दिया हो। वह बहुत घबराया। यह उसने क्या किया कि दूसरे गिरगिट के कहने में आकर ख्वामख्वाह वह पत्ती खा ली। अब अगर वह जिन्दगी-भर जमीन के अन्दर ही दफन रहा तो?

वह अपने को झटककर बाहर निकलने के लिए जोर लगाने लगा। पहले तो उसे कामयाबी हासिल नहीं हुई। पर फिर लगा कि ऊपर जमीन पोली हो गई है और वह बाहर निकल आया है। ज्यों ही उसका सिर बाहर निकला और बाहर की हवा अन्दर गई, उसने एक और ही अजूबा देखा। उसका सिर गिरगिट के सिर जैसा ना होकर साँप के सिर जैसा था। वह पूरा जमीन से बाहर आ गया, पर साँप की तरह बल खाकर चलता हुआ। अपने शरीर पर नजर डाली, तो वही लहरिया नजर आया जो उसे पास वाले साँप के बदन पर था। उसने कुण्डली मारने की कोशिश की, तो कुण्डली

लग गई। फन उठाना चाहा तो, फन उठ गया। वह हैरान भी हुआ और खुश भी। उसकी कामना पूरी हो गई थी। वह साँप बन गया था।

साँप बने हुए उसने आसपास के माहौल को देखा। सब चूहे-चमगादड़ उससे खौफ खाए हुए थे। यहाँ तक कि सामने के पेड़ का गिरगिट भी डर के मारे जल्दी-जल्दी रंग बदल रहा था। वह रेंगता हुआ उस इलाके से दूसरे इलाके की तरफ बढ़ गया। नीचे से जो पत्थर-काँटे चुभे, उनकी उसने परवाह नहीं की। नया-नया साँप बना था, सो इन सब चीजों को नजर-अन्दाज किया जा सकता था। पर थोड़ी दूर जाते-जाते सामने से एक नेवला उसे दबोचने के लिए लपका, तो उसने सतर्क होकर फन उठा लिया।

उस नेवले की शायद पड़ोस के साँप से पुरानी लड़ाई थी। साँप बने गिरगिट का मन हुआकि वह जल्दी से रंग बदले ले, पर अब रंग कैसे बदल सकता था? अपनी लहरिया खाल की सारी खूबसूरती उस वक्त उसे एक शिकंजे की तरह लगी। नेवला फुदकता हुआ बहुत पास आ गया था। उसकी आँखें एक चुनौती के साथ चमक रही थीं। गिरगिट आखिर था तो गिरगिट ही। वह सामना करने की जगह एक पेड़ के पीछे जा छिपा। उसकी आँखों में नेवले का रंग और आकार बसा था। कितना अच्छा होता अगर वह साँप न बनकर नेवला बन गया होता!

तभी उसका सिर फिर भारी होने लगा। नींद की पत्ती अपना रंग दिखा रही थी। थोड़ी देर में उसने पाया कि जिस्म में हवा भर जाने से वह काफी फूल गया है। ऊपर को गरदन निकल आई है और पीछे को झबरैली पूँछ। जब वह अपने को झटककर आगे बढ़ा, तो लहरिया साँप एक नेवले में बदल चुका था।

उसने आसपास नजर दौड़ाना शुरू किया कि अब कोई साँप नजर आए, तो उसे वह लपक ले। पर साँप वहाँ कोई था ही नहीं। कोई साँप निकलकर आए, इसके लिए उसने ऐसे ही उछलना-कूदना शूरू किया। कभी झाड़ियों में जाता, कभी बाहर आता। कभी सिर से जमीन को खोदने की कोशिश करता। एक बार जो वह जोर-से उछला तो पेड़ की टहनी पर टँग गया। टहनी का काँटा जिस्म में ऐसे गड़ गया कि न अब उछलने बने, न नीचे आते। आखिर जब बहुत परेशान हो गया, तो वह मनाने लगा कि क्यों उसने नेवला बनना चाहा। इससे तो अच्छा था कि पेड़ की टहनी बन गया होता। तब न रेंगने की जरूरत पड़ती, न उछलने-कूदने की। बस अपनी जगह उगे हैं और आराम से हवा में हिल रहे हैं।

नींद का एक और झोंका आया और उसने पाया कि सचमुच अब वह नेवला नहीं रहा, पेड़ की टहनी बन गया है। उसका मन मस्ती से भर गया। नीचे की जमीन से अब उसे

कोई वास्ता नहीं था। वह जिन्दगी भर ऊपर ही ऊपर झूलता रह सकता था। उसे यह भी लगा जैसे उसके अन्दर से कुछ पत्तियाँ फूटने वाली हों। उसने सोचा कि अगर उसमें फूल भी निकलेगा, तो उसका क्या रंग होता? और क्या वह अपनी मर्जी से फूल का रंग बदल सकेगा?

पर तभी दो-तीन कौवे उस पर आ बैठे। एक ने उस पर बीट कर दी, दूसरे ने उसे चोंच से कुरेदना शुरू किया। उसे बहुत तकलीफ हुई। उसे फिर अपनी गलती के लिए पश्चाताप हुआ। अगर वह टहनी की जगह कौवा बना होता तो कितना अच्छा था! जब चाहो, जिस टहनी पर जा बैठो, और जब चाहो, हवा में उड़ान भरने लगो!

अभी वह सोच ही रहा था कि कौवे उड़ चले। पर उसने हैरान होकर देखा कि कौवों के साथ वह भी उसी तरह उड़ चला है। अब जमीन के साथ-साथ आसमान भी उसके नीचे था। और वह ऊपर-ऊपर उड़ा जा रहा था। उसके पंख बहुत चमकीले थे। जब चाहो उन्हें झपकाने लगो, जब चाहे सीधे कर लो। उसने आसमान में कई चक्कर लगाए और खूब काँय-काँय की। पर तभी नजर पड़ी, नीचे खड़े कुछ लड़कों पर जो गुलेल हाथ में लिए उसे निशाना बना रहे थे। पास उड़ता हुआ एक कौवा निशाना बनकर नीचे गिर चुका था। उसने डरकर आँखें मूँद लीं। मन ही मन सोचा कि कितना अच्छा होता अगर वह कौवा न बनकर गिरगिट ही बना रहता।

पर जब काफी देर बाद भी गुलेल का पत्थर उसे नहीं लगा, तो उसने आँखें खोल लीं। वह अपनी उसी जगह पर था जहाँ सोया था। पंख-वंख अब गायब हो गए थे और वह वही गिरगिट का गिरगिट था। वही चूहे-चमगादड़ आसपास मण्डरा रहे थे और साँप अपने बिल से बाहर आ रहा था। उसने जल्दी से रंग बदला और दौड़कर उस गिरगिट की तलाश में हो लिया जिसने उसे नींद की पत्ती खाने की सलाह दी थी। मन में शुक्र भी मनाया कि अच्छा है वह गिरगिट की जगह और कुछ नहीं हुआ, वरना उस गलत सलाह देने वाले गिरगिट को गिरगिटी भाषा में मजा कैसे चखा पाता!

कहानी

नन्हे आर्थर का सूरज

हद्याक ग्युलनज़रयान

दादी को शिशिर का मौसम अच्छा नहीं लगता था लेकिन नन्हे आर्थर को उस समय खूब मजा आता था। दादी को शिशिर इसलिए अच्छा नहीं लगता था क्योंकि उस समय बारिश होती थी, जिससे उसके पैर की तकलीफ बढ़ जाती थी।

आर्थर को शिशिर बहुत पसन्द था। ये मौसम तरह-तरह की बढ़िया चीजें लेकर आता था। खुबनियाँ और अंगूर, सेब और नाशपातियाँ। और माँ इन फलों से तरह-तरह के 'विटमिन' बनाती थी।

रोज सुबह वह पापा से कहती थी : 'मेसरोप, बाजार जाकर कुछ सेब और अंगूर ले आइए : बच्चे को विटामिनों की जरूरत है।'

पापा जाकर सेब, नाशपातियाँ और एक-दो अनार ले आते थे।

आर्थर को शिशिर ;तु और भी अच्छी लगने लगी थी।

लेकिन दादी को नहीं। दादी को विटामिनों की जरूरत नहीं थी। लगता है, बड़े लोगों को विटामिनों की जरूरत नहीं होती। लगता था कि बड़े लोग बस मजे के लिए फल खाते थे। उनके लिए ये बस सेब, नाशपाती और अंगूर थे, विटामिन नहीं थे।

बाहर हल्की बारिश हो रही थी और दादी भीतर चारपाई पर लेटी थी। वह घुटने मोड़े हुए पड़ी थी और धीरे-धीरे कराह रही थी, 'उफ, उफ, उफ।'

आर्थर उसके पास गया।

"दादी, मेरी बात सुन रही हो, दादी?"

"क्या बात है, बालिक-जान?" वह बोली।

"तुम्हारे पैर में फिर से दर्द हो रहा है न?" आर्थर ने पूछा।

"हाँ, प्यारे," वह बस इतना ही बुदबुदाई।

आर्थर ने दादी को एक सन्तरा दिया।

"लो, ये विटामिन खा लो, तुम्हारी तकलीफ

दूर हो जाएगी," उसने कहा।

दादी मुस्कुराई। वह बोली, "तुम खा लो, बालिक-जान। सन्तरों से मुझे फायदा नहीं होगा। मुझे धूप चाहिए, लेकिन सूरज तो बादलों के पीछे छिप गया है, बदमाश कहीं का।"

नन्हा आर्थर बादलों से बहुत गुस्सा था। उसने अपने छोटे कुत्ते कोटोट को बिस्तर के नीचे से बुलाया, अपनी खिलौना-बन्दूक उठायी और छत पर चला गया।

उसने कोटोट से कहा, "तू इन बादलों पर भौंक और मैं अपनी बन्दूक से उन पर गोली चलाऊँगा।"

कोटोट एक-दो बार भौंका लेकिन जोर से नहीं। वह समझ रहा था कि आर्थर उसके साथ खेलना चाहता है, इसलिए वह खुशी से भौंक रहा था। ऐसी भौं-भौं से भी भला कोई बादल डरता?

लेकिन आर्थर ने कोटोट की भौं-भौं पर ध्यान ही नहीं दिया। वह बड़े गुस्से से बादलों को घूरते हुए अपनी बन्दूक से गोलियाँ दाग रहा था, और चिल्ला रहा था : "लो, ये लो, मजा आया? और छिपाओगे सूरज को? ये लो, धायँ, धायँ, धायँ।"

वह गोलियाँ चलाता रहा, जब तक कि धायँ, धायँ, धायँ चिल्लाते-चिल्लाते उसका मुँह नहीं दर्द करने लगा।

उस समय तक बादल थोड़ा डर गये थे और बारिश रुक गयी थी, फिर भी सूरज नहीं निकला था।

"ओह, मेरी बन्दूक इतनी छोटी है, इसीलिए पूरा असर नहीं हो रहा है," आर्थर ने सोचा।

अगर आर्थर के पास वैसी तोप होती जैसी राचिक के पास थी तो बस, वह एक धमाका करता और सारे बादल भाग जाते।

लेकिन आर्थर के पास तोप नहीं थी, और राचिक का घर दूर था। अब कुछ नहीं किया जा सकता था और आर्थर उदास होकर कमरे में लौट आया। वह दादी के पास बैठ गया।

"दादी, मेरी बात सुन रही हो, दादी?"

"अब क्या है बालिक-जान?" दादी ने पूछा।

"मैं बादलों को थोड़ा-सा ही डरा पाया। बारिश तो रुक गयी, लेकिन सूरज अब भी छिपा हुआ है। मेरे पास तोप नहीं है न, और बादल मेरी बन्दूक से डरते ही नहीं हैं।"

दादी मुस्कुराई।

"कोई बात नहीं मेरे प्यारे," वह बोली। ''लेकिन देखो, तुमने बादलों को डराकर बारिश तो बन्द करा दी। मेरी तबियत थोड़ी बेहतर हो गयी है, अब मेरे पैर में बिल्कुल दर्द नहीं हो रहा है। मैं तुम्हारे पिताजी से कहूँगी कि तुम्हारे लिए एक तोप ले आयें। फिर तुम सारे बादलों को भगा सकोगे।"

"दादी, क्या वाकई तुम्हारी तबियत अच्छी हो गयी है?" आर्थर ने फिर पूछा।

"हाँ, अब मुझे काफी बेहतर लग रहा है। लगता है आधा दर्द चला गया है।"

"दादी!" अचानक आर्थर उछलकर बोला। "मैं समझ गया कि क्या करना चाहिए। अब तुम्हारा बाकी आधा दर्द भी भगा दूँगा।"

दादी ने मुस्कुराकर पूछा, "बिना तोप के तुम कैसे करोगे?"

"बस देखती जाओ," वह बोला। "मैं अभी इसे भगा दूँगा। कसम से, बिल्कुल भगा दूँगा। अम्मा, सुनो अम्मा!"

"क्या बात है बेटे?" रसोई से माँ की आवाज आयी।

"मुझे कुछ कागज चाहिए।"

"पापा की मेज से ले लो," माँ ने कहा।

पापा की मेज पर कागजों का एक मोटा गठर रखा था। पहले आर्थर ने एक साफ कागज लिया फिर उसने एक मोटी लाल पेंसिल उठाई। उसने कागज को फर्श पर रखा, पेट के बल लेट गया और तस्वीर बनाने लगा। वह पूरा जोर और मन लगाकर काम में जुटा हुआ था और उसकी जीभ बाहर निकली थी। उसने एक बड़ा-सा लाल-लाल सूरज बनाया। वह इतना बढ़िया सूरज था कि उसकी गरमी से आर्थर के चेहरे पर पसीना आ गया।

आखिरकार, सूरज तैयार हो गया। आर्थर ने अपने चारों ओर कूद-फाँद मचा रहे कोटोट को वहाँ से भगा दिया ताकि वह बदमाश अपने गन्दे पंजे सूरज पर न रख दे। फिर वह सूरज को लेकर दादी के पास गया।

"दादी, मेरी बात सुन रही हो?"

"क्या बात है बाबू?" वह बुदबुदाई।

"देखो, मैंने तुम्हारे लिए सूरज बनाया है।"

दादी ने सूरज को देखा और मुस्कुराई।

"अरे, कितना प्यारा सूरज है," उसने खुश होकर कहा। "ओहो, और ये कितना गरम है। लाओ, इसे मेरे पैर के पास रख दो।"

दादी ने सूरज को लेकर अपने दुख रहे पैर के पास रख लिया।

"हाँ, ये है सूरज। जानते हो, मेरे पैर का दर्द बिल्कुल ठीक हो गया। दादी को किसने ठीक किया? आर्थर ने।"

दादी ने अपने पोते की पप्पी ली, फिर मुस्कुराई, फिर उसकी पप्पी ली, फिर और मुस्कुराई और बार-बार खुश होकर नन्हे आर्थर की पप्पी लेती रही, तब तक जब तक कि उसे सुस्ती आने लगी और वह आर्थर के सूरज को पैर पर रखे हुए सो गयी।

शाम होते-होते दादी के पैर में बिल्कुल दर्द नहीं रह गया। बेशक, आर्थर का सूरज सरककर फर्श पर जा गिरा था, और बेवकूफ कोटोट कई बार सूरज पर अपने गन्दे पंजे रख चुका था, लेकिन दादी ठीक हो चुकी थी।

शाम को पापा ने दादी से पूछा कि उसकी तबियत कैसी है।

"बहुत अच्छी, आर्थर के सूरज ने मुझे ठीक कर दिया।"

पापा कुछ समझे नहीं। लेकिन दादी ने उन्हें सारी बात बता दी।

आर्थर ने खुशी से नाक खुजाई।

हमेशा ऐसा ही होता था। जब आर्थर खुश होता था तो उसकी नाक में खुजली होने लगती थी। और तब भी जब वह रोता था।

आज आर्थर अपने आप से बहुत खुश था। उसने इतनी अच्छी तरह व्यवहार किया कि पापा ने कहा कि आर्थर दूसरे बच्चों के लिए एक उदाहरण है। आर्थर खुश होकर सोने चला गया।

आर्थर का सूरज फर्श पर पड़ा था और सूरज के ऊपर, पेट के बल कोटोट लेटा हुआ था। आर्थर उस पर चिल्लाया :

"ओय कोटोट, सूरज के ऊपर कोई कैसे सो सकता है? तेरा पेट जल जायेगा। उठ वहाँ से!"

अनुवाद : **कविता**

कहानी

हम सूरज को देख सकते हैं

• मिकोला गिल

वह एक सिपाही था।

वह 1941 में सिपाही बना, जब हिटलर की नाज़ी फ़ौज ने उसके देश पर हमला कर दिया।

वह कोई साधारण सिपाही नहीं था। वह एक इंजीनियर था। फ़ौज ने इंजीनियर का काम ख़तरनाक और कठिन होता है। उसे हमेशा आगे रहना पड़ता है। जब टैंक आगे बढ़ते हैं तो उससे पहले इंजीनियर को जाकर बारूदी सुरंगें हटानी पड़ती हैं।

इंजीनियर को बहादुर होना चाहिए। उसका कलेजा बहुत मज़बूत और हाथ बहुत सधे होने चाहिए। अगर हाथ काँपे तो बारूदी सुरंग उसके हाथों में ही फट जाएगी।

हमारा सिपाही बहादुर था। उसका कलेजा मज़बूत था और हाथ सधे हुए थे। उसने कभी गलतियाँ नहीं कीं। उसने सैकड़ों, या शायद हज़ारों सुरंगें हटाईं और जीत का रास्ता साफ़ किया। ये बहुत लम्बा रास्ता था। चार साल बाद 1945 में लड़ाई ख़त्म हुई।

सिपाही ने सोचा कि अब फ़ौज में उसका काम ख़त्म हो गया। वह घर आया। उसे उम्मीद थी कि अब वह हल चलायेगा और फसल उगायेगा। लेकिन तभी एक हादसा हो गया। दुश्मन की फ़ौज खेतों में बारूदी सुरंगें छोड़ गयी थी। एक दिन खेत में काम करते हुए उसका किशोर उम्र का बेटा सुरंग फटने से मारा गया। सिपाही ने युद्ध में कई बार मौत देखी थी लेकिन जब उसके बेटे की मौत हुई तो दुख से उसके बाल सफ़ेद हो गये।

एक बार उसने सुना कि अस्पताल में एक अलग वार्ड है जहाँ बारूदी सुरंगों से घायल हुए बच्चे भरती हैं। वह उनसे मिलने गया। उन्हें देखकर उसका दिल रो उठा जैसे अपने बेटे की मौत के समय हुआ था। एक बच्चा उसे हमेशा याद रह गया। उसकी आँखों की जगह सिर्फ गड्ढे रह गये थे। उस बच्चे के शब्द उसके कानों में गूँजते रहे : "मैं सूरज को नहीं देख सकता..."

इसलिए सिपाही ने एक बार फिर फ़ौजी वर्दी पहन ली। नाज़ी फ़ौज जो सुरंगें, बिना फटे हुए गोले और बम छोड़ गयी थी, वह उन्हें साफ़ करने में लग गया। जब भी वह किसी सुरंग को नाकाम करता था तो गुस्से और घृणा के साथ उसे उठाकर किनारे फेंकता था जैसे वह कोई जहरीला साँप हो। वह बुदबुदाता था : ह्अब तुम किसी

की आँखों से सूरज को छीन नहीं सकते।ह

सिपाही कई साल तक अपना ख़तरनाक काम करता रहा ताकि लोग बिना डरे हर जगह चल-फिर सकें और बच्चों का जहाँ जी चाहे वे खेल सकें।

दूसरे देशों में भी लड़ाइयाँ जारी थीं। अफ्रीका के कई देशों में जनता अपनी आज़ादी के लिए लड़ रही थी। वहाँ भी जनता के दुश्मनों ने बारूदी सुरंगें, बम और गोलों से धरती को पाट दिया था। वहाँ भी अस्पतालों में घायल बच्चों से भरे हुए वार्ड थे।

आज़ादी के बाद एक देश की सरकार के अनुरोध पर सोवियत संघ के उस सिपाही को बारूदी सुरंगें हटाने के लिए वहाँ भेजा गया।

उसने फिर कोई ग़लती नहीं की। उसके हाथ कभी नहीं काँपे। उसने हज़ारों सुरंगों और बमों को नाकाम किया। उस सुदूर अफ्रीकी देश में भी जहरीले साँप के दाँत तोड़कर फेंकते हुए वह कहता था : ह्अब तुम कभी किसी की आँखों से सूरज को नहीं छीन पाओगे।ह

उसे एक छोटा-सा गाँव ज़िन्दगी भर याद रहा। सारे गाँव वालों ने सिपाही का स्वागत किया। वह ज़ानते थे कि मज़दूरों के राज से आया यह सिपाही सच्चे दिल से उनकी मदद करेगा। उसे एक छोटी बच्ची याद थी जिसने उसे जंगली फूलों का गुलदस्ता भेंट किया था। बच्ची का रंग बिल्कुल साँवला था और उसकी मुस्कान ने उसका गोल चेहरा चमक उठता था। सिपाही को उस गाँव में एक ऐसे खेत से सुरंगें हटानी थीं जिसमें ऊँची घास उगी हुई थी। किसानों ने खेत में हल चलाने की कोशिश की लेकिन उनमें से कई तो लौटकर ही नहीं आये।

सिपाही ने खेत लगभग साफ़ कर दिया था। बस एक छोटा-सा हिस्सा बचा रह गया था। लेकिन सिपाही थका हुआ था।

उस शाम एक धमाके से गाँव दहल गया। किसान समझ गये कि क्या हुआ था। वे सिपाही को गाँव में ले आये। वह ज़िन्दा था लेकिन उसकी आँखों से सूरज हमेशा के लिए छिन गया था। वह अफ्रीका की गर्म धूप को महसूस कर सकता था लेकिन उसे देख नहीं सकता था।

हज़ारों लोग उसे विदाई देने आये। साँवली लड़की ने उसे फिर फूलों का गुलदस्ता दिया और हालाँकि वह उसे देख नहीं सकता था, पर वह उसे पहचान गया। उसके मज़बूत हाथ ने बच्ची के रूखे बालों को प्यार से सहयाला। शायद पहली बार उसका हाथ काँप गया।

घर पहुँचने पर उसे पता चला कि वह नाना बन गया है। उसकी बेटी ने एक प्यारी-सी बच्ची को जन्म दिया था। वह बहुत गोरी थी और उसकी आँखें नीली थीं। लेकिन सिपाही के घर वालों को यह देखकर हैरानी होती थी कि वह हमेशा बच्ची को ह्साँवलीह कहकर बुलाता था। शायद इसलिए कि उसने जिस बच्ची को आखिरी बार देखा था वह खिली हुई मुस्कान वाली साँवली लड़की ही थी।

हम सब सूरज को देख सकते हैं। तुम उसे देख सकते हो, मैं भी देख सकता हूँ। लेकिन सफ़ेद बालों वाला एक लम्बा आदमी छड़ी टेकते हुए सड़क पर जा रहा है। सूरज उसके चेहरे पर चमकता है लेकिन वह सूरज को देख नहीं सकता। हमें प्यार और सम्मान से उसे सलाम करना चाहिए।

अनुवाद : **कविता**

उत्कृष्ट कलाकार

• कैरल मूर

मौन्सियर साइनी एल एबे अपने समय का एक माहिर कलाकार था, जो 1932 में रिटायर होने वाला था। मई का महीना था। मुलियानो बारतोली, जो इटली का एक धनी व्यक्ति था, ने उससे कहा कि, ''मैं अपने हॉल (बैंकट रूम) की दीवार पर अपनी एक तस्वीर लगाना चाहता हूँ। क्या तुम उसे पेण्ट कर सकोगे? तस्वीर 20 फीट लम्बी होनी चाहिए।

उसके प्रस्ताव पर चिन्तन करते हुए मौन्सियर ने अपना सिर हिलाया, ''मैं रिटायर होने वाला हूँ, इसलिए मैं यहाँ रहूँगा नहीं। माफ कीजिएगा, मैं अपकी तस्वीर नहीं बना सकता'' पर सीनियर बारतोली की उदास आँखों में निराशा देखकर उसने कहा, ''ठीक है, अगर आप दिल से मुझे अपनी क्षमताओं की सीमाओं को जानने की इजाजत दें तो एक सम्भावना है। पर इसके बदले मै। पैसे की बजाय थोड़ा खाना और एक बिस्तर चाहता हूँ। इसके अलावा तस्वीर बनाने के लिए तुम्हें मेरे सामने बैठने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि मेरी याददाश्त बहुत बढ़िया है। मैं पहले ही तुम्हारी तस्वीर देख सकता हूँ और इसे बनाने का तरीक़ा भी जान सकता हूँ। लेकिन मैं तुमसे जोर देकर कहना चाहता हूँ सीनियर बारतोली कि जब मैं तुम्हारी तस्वीर पर काम करूँगा तो यह गुप्त होगा, तुम्हारे लिए भी।

कितना अजीब है, ग्राहक ने सोचा। फिर उसने सोचा कि शायद बड़े उस्ताद कलाकार ऐसा ही करते होंगे। ''ज़रूर!'' उसने कहा। ''जैसा आप चाहें, लेकिन मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आपकी कोशिश के बदले मैं आपको कुछ न कुछ जरूर दूँगा। आइये सौदा तय करें।

जैसे ही मौन्सियर ने 20 फीट लम्बी दीवार और पूरी जगह के बारे में सोचा, उसकी आँखों

में चमक आ गई। वाकई योजना के हिसाब से अद्‌भुत जगह है और उसकी कल्पना को पंख लग गये। हालाँकि बारतोली या और कोई दूसरा इस बात से अनजान था। मौन्सियर को अपने पूरे कैरियर (जो कि 45 साल का था।) अपने तरीक़े से तस्वीर बनाने की जबर्दस्त ललक थी। और वह था क्या? निश्चय ही वह ठर्लाछज्प्छम- या पूर्व नवजागरण स्टाइल का नहीं था। नहीं। मौन्सियर में अपने उस बन्धन से मुक्ति की तड़प थी। लेकिन संघ, उसकी कला और उसका रोजगार उसे ऐसा करने की इजाजत नहीं देता था, इसलिए वह नियमों का पालन कर रहा था। हालाँकि उसे उस पर कभी भी गर्व नहीं था। निश्चय ही वह सीनियर बारतोली के सामने इसे प्रकट नहीं करना चाहता था।

सौदा तय हो गया और समझौता पक्का हो गया।

तुरन्त ही उस्ताद कलाकार ने एक ऊँचा परदा सामाने की दीवार पर फेंका, जिससे सीनियर बारतोली कुछ भी न देख सके। बारतोली ने झाँकने की कोशिश की। लेकिन मौन्सियर ने निवेदन किया कि वह अपनी कला की तकनीक को पूरी तरह गुप्त रखना चाहता है।

एक हफ्ता गुजर गया। ''काम कैसा चल रहा है?'' सीनियर बारतोली ने उम्मीद से पूछा।

मौन्सियर एल ऐबे ने परदे के पीछे से जवाब दिया। ''बहुत अच्छा चल रहा है। जब मैं आठ साल का था, मैंने महान ऐम्ब्रोजियो लॉरजेन्टी से ट्रेनिंग ली थी। मैं उसका नाम कभी भी बदनाम नहीं करूँगा। उसने मुझे रंग घिसना, प्लास्टर चढ़ाना सिखाया। कभी धीमे और कभी बहुत तेज उसने मुझे रेखाएँ खींचनी सिखाई और सबसे महत्वपूर्ण बात उसने मुझे कभी भी जल्दबाजी न करने की सीख दी। मेरी ट्रेनिंग बहुत सख्त थी और ट्रेनिंग पूरी होने के बाद बहुत ही प्रभावशाली। सीनियर बारतोली एक मास्टर पीस...

हिचकिचाते हुए बारतोली चला गया।

एक महीना बीत गया। ''कहाँ तक पहुँचा?'' बारतोली ने पूछा।

''बस होने वाला है,'' मौन्सियर ने फिर परदे के पीछे से कहा। उसके शब्दों में एक अजीब सी छनछनाहट और झंकार थी। तुम्हें पता है तुम कितने भाग्यशाली हो, जो मैं तुम्हारी तस्वीर बना रहा हूँ। ऐसा केवले फ्रेस्को ही कर सकता था। इसमें लाइम प्लास्टर की चार परतें लगी हैं। पहली परत टुलास्ट्रियों का है, जो एरासियो से बनता है, फिर अनानीतो और अन्त में इन्तानेको। और जो अन्य हिस्से मैंने बनाये उनकी तो बात ही छोड़ दो, लेकिन यह सबसे बढ़िया प्लास्टर करने का तरीका है। सीनियर बारतोली यह कृति अमर होगी। आह! यह कोशिश बहुत समय खाने वाला है।

गहरी साँस लेते हुए बारतोली फिर लौट गया। अभी कितना समय लगेगा? कोई बता सकता है?

लगभग तीन-चार महीने बीत गये। अन्ततः आधा वर्ष गुजर गया। सीनियर बारतोली उस्ताद कलाकार से अपनी तस्वीर देखने की जिद करने लगा। ''अब तुम इसे खत्म करो और मैं इसे आज ही देखूँगा।'' वह चिल्लाया और गुस्से से हिलने लगा।

परदे के पीछे से मौन्सियर गुस्से से बाहर आया और कहा - ''ठीक है, तुम्हें सिर्फ निवेदन करने की जरूरत थी।'' और उसे 20 फीट लम्बा परदा खींचकर एक तरफ कर दिया।

गुलियानो बारतोली एक मिनट खड़ा रहा और उसका मुँह खुला का खुला रह गया। उसकी आँखें लाल हो गईं और उसने अपने बाल पकड़ लिए, जो कि उसके सिर में बहुत थोड़े ही बचे रह गये थे। वह एक बौने की तरह उछला और ऐंठने लगा। उसकी भौंहे ऐसे तन गईं जैसे कोई जादू हुआ हो। बारतोली को निश्चय ही अपनी तस्वीर पसन्द नहीं आई, जरा भी नहीं। उसने उसे फेंक दिया।

''कितना भद्दा और गन्दा है। क्या मतलब है इसका? तुम्हें एक भी फ्लोरीन नहीं मिलेगा। सुना तुमने? तुम कलाकार नहीं हो। हो सकता है कि तुम एक चोर हो या पागल! दूर हो जाओ मेरी नज़रों से। आज रात ही मेरा घर छोड़ दो, नहीं तो मैं तुम्हें बाहर फेंक दूँगा।''

तो क्या मौन्सियर एल ऐबे की तस्वीर, ग़लत थी? वह इसे नहीं देख सकता था। बहुत लम्बे समय से एकाग्रचित्त होकर वह उसे बना रहा था। यह उसका मास्टरपीस था। उसे दुख नहीं था, बिल्कुल भी नहीं। उसने दिल से इस 20 फीट लम्बी तस्वीर को बनाया था। कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई उसके बारे में क्या कहता है। मौन्सियर ने इसे अपने तरीक़े से बनाया था। हालाँकि बारतोली उसकी इस दीवानगी को बर्दाश्त नहीं कर पाया। (उसके क्यूबिस्ट भावों के साथ) लेकिन पिकासो ने इस पर गर्व किया होता।

अगर सच कहा जाये तो मौन्सियर निश्चय ही सनकी नहीं था। बल्कि वह समय से पहले 500 वर्ष पहले पैदा हुआ था।

अनुवाद - नमिता

अनुराग पुस्तकालय में फिल्म शो का आयोजन

28 और 29 जून को लखनऊ में अनुराग पुस्तकालय में 'बाल फिल्म महोत्सव' का आयोजन किया गया। इसमें बच्चों के साथ-साथ उनके अभिभावकों ने भी कुछ मजेदार फिल्मों का लुत्फ़ उठाया। फिल्म शो में सई पराजपें की फिल्म 'भागो भूत', संकेत मेश्राम की फिल्म 'छुटकन की महाभारत', और लॉरेल-हार्डी की लघु फिल्म 'लिबर्टी' का प्रदर्शन हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत अनुराग ट्रस्ट की गतिविधियों के बारे में बने एक लघु वृत्त चित्र से हुई। समारोह में श्लोक शर्मा की लघु फिल्म 'ट्यूबलाइट का चाँद' और चार्ली चौप्लिन की लघु फिल्म 'द बैंक' भी दिखायी जानी थीं लेकिन ख़राब मौसम और दूर से आने वाले बच्चों को ध्यान में रखकर उन्हें छोड़ दिया गया।

सबसे पहले 'भागो भूत' दिखायी गयी। 'चश्मे बद्दूर', 'कथा' और 'स्पर्श' जैसी चर्चित फिल्मों की प्रसिद्ध निर्देशिका सई परांजपे की फिल्म एक गाँव की कहानी है जहाँ के लोग पास के जंगल में रहने वाले भूत की अफवाहों से डरे हुए हैं। जंगल में जाने वालों को तरह-तरह की डरावनी आवाजें सुनाई देती हैं। जब नानू नाम का शरारती लड़का भूत को ढूँढ़ने जंगल में जाता है तो उसकी मुलाकात भागो नाम के आदमी से होती है जो समाज से बहिष्कृत होकर जंगल के एक सूखे कुएँ में छिपकर रहता है। फिल्म बहुत मज़ेदार और मार्मिक ढंग से दोनों की दोस्ती और मिलजुलकर लोगों की मदद करने की कहानी कहती है।

पिछली सदी के तीसरे-चौथे दशक की प्रसिद्ध हास्य जोड़ी लॉरेल और हार्डी की फिल्म 'लिबर्टी' पुलिस से बचकर भाग रहे दो आम लोगों और उनके साथ होने वाली दिलचस्प घटनाओं को बड़े ही मनोरंजक अंदाज में दिखाती है।

कार्यक्रम की शुरुआत में कवयित्री कात्यायनी ने कहा कि आज बच्चों के लिए ऐसी फिल्मों और साहित्य की काफी कमी है जो उन्हें अधिक संवेदनशील, प्रकृति, मनुष्यों और समाज के प्रति सरोकार रखने वाला बेहतर इंसान बनने में मदद करें। उनकी मासूमियत को असमय खत्म न करें। सहज हास्य की जगह बच्चे अभी से फूहड़ हँसी के कार्यक्रम देखते हैं। कम उम्र से ही वे हिंसा, अपराध, लालच और झूठ को

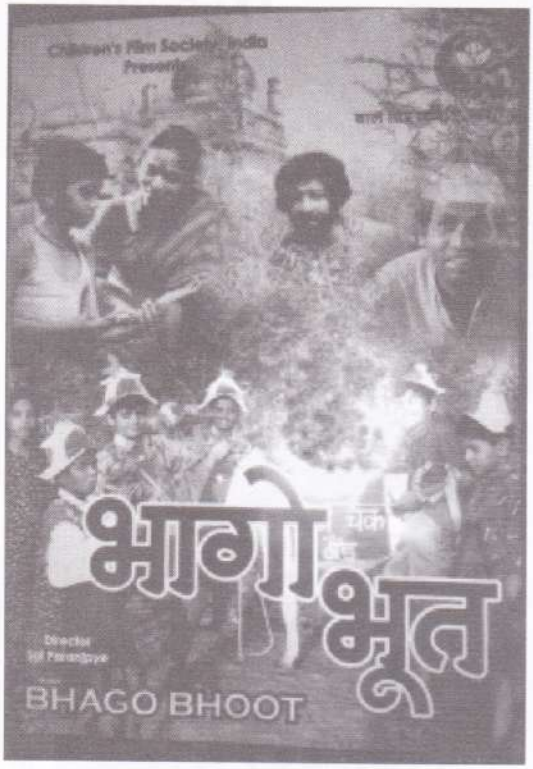

ग्लैमराइज करने वाली फिल्में, कॉमिक्स, विज्ञापन आदि देख रहे हैं। इसके नतीजे हमें समाज में अभी से दिखने लगे हैं।

दूसरे दिन दिखायी गयी 'छुटकन की महाभारत' में दिखाया गया कि कैसे एक गाँव में रहने वाला 10 वर्षीय छुटकन नाम का बच्चा अपने ऊपर हो रहे अत्याचार को मिटाने के सपने देखता है। उसके सपने जब सच होने लगते हैं तो वह अपने साथ-साथ सभी अच्छे लोगों के लिए अच्छाई और बुरे लोगों के लिए बुराई के सपने देखता है। उसके सपने बच्चों की नैसर्गिक न्यायप्रियता को दिखाते हैं। वह मामा-मामी के अत्याचार का दुख भुलाने के लिए तरह-तरह के सपने देखा करता है और एकाएक उसके सपने सच होने लगते हैं। उसके सपने में महाभारत की कहानी बदल जाती है और गाँव में हो रही महाभारत में मंच पर कौरव-पांडव आपस में दोस्त बन जाते हैं। उसके साथ दादागीरी करने वाला लड़का गधा बन जाता है और झगड़ने वाले लोग बत्तखों में बदल जाते हैं। उसका इलाज करने के लिए ओझा बुलाया जाता है मगर तभी वहां पांडव पहुँच जाते हैं और उसे बचाकर ओझा और पंडित का ही इलाज कर देते हैं। वे ऐलान करते हैं कि आज से सिर्फ छुटकन की महाभारत ही खेली जायेगी।

सत्यम ने फिल्मों का परिचय दिया और यह भी बताया कि पिछले दिनों एक अध्ययन के मुताबिक स्कूल से निकलने तक एक औसत शहरी बच्चा पर्दे पर 8000 हत्याएँ और क़रीब एक लाख हिंसक दृश्य देख चुका होता है। 18 वर्ष का होते-होते वह 20,000 हत्याओं और 15,000 स्त्री विरोधी अपराधों सहित 2 लाख हिंसक दृश्य देख चुका होता है। ऐसे में बच्चों के बीच स्वस्थ मनोरंजन और सकारात्मक सोच देने वाली फिल्मों और साहित्य को ले जाना एक बहुत बड़ी ज़रूरत है। इसी के तहत अनुराग पुस्तकालय में बच्चों, किशोरों और युवाओं के लिए विश्व सिनेमा के खजाने से चुनिंदा फिल्मों के प्रदर्शन और उन पर बातचीत का सिलसिला शुरू किया गया है।

इस अवसर पर बाल साहित्य और बच्चों के कलात्मक पोस्टरों की प्रदर्शनी भी आयोजित की गयी। कार्यक्रम में निरालानगर, महानगर, बाबा की बगिया तथा लखनऊ विश्वविद्यालय परिसर के बच्चों, अभिभावकों और छात्रें ने भागीदारी की।

रिपोर्ट : **गीतिका**

जब ज़ेब्रा राम दंग रह गये

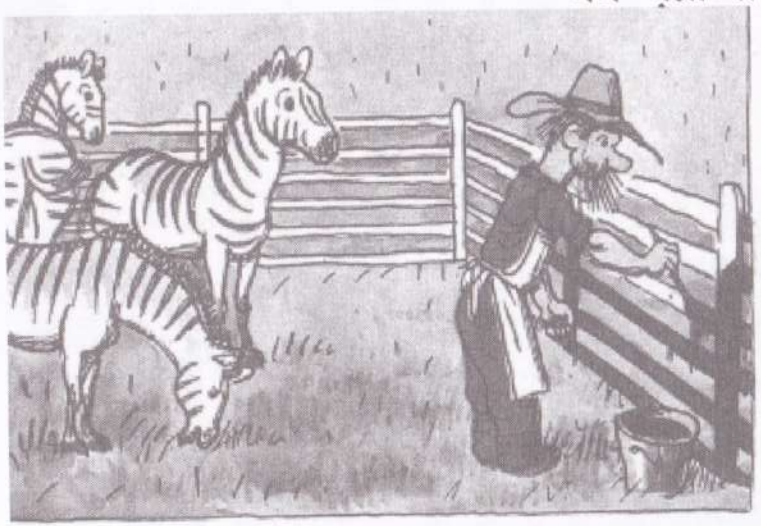

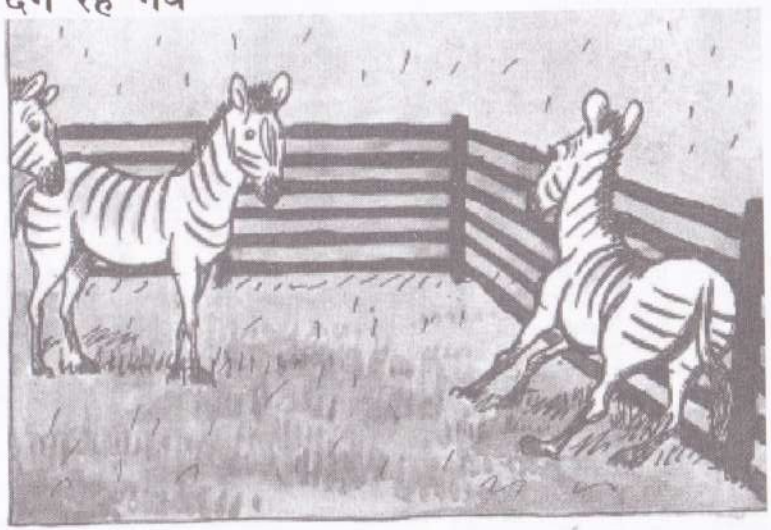

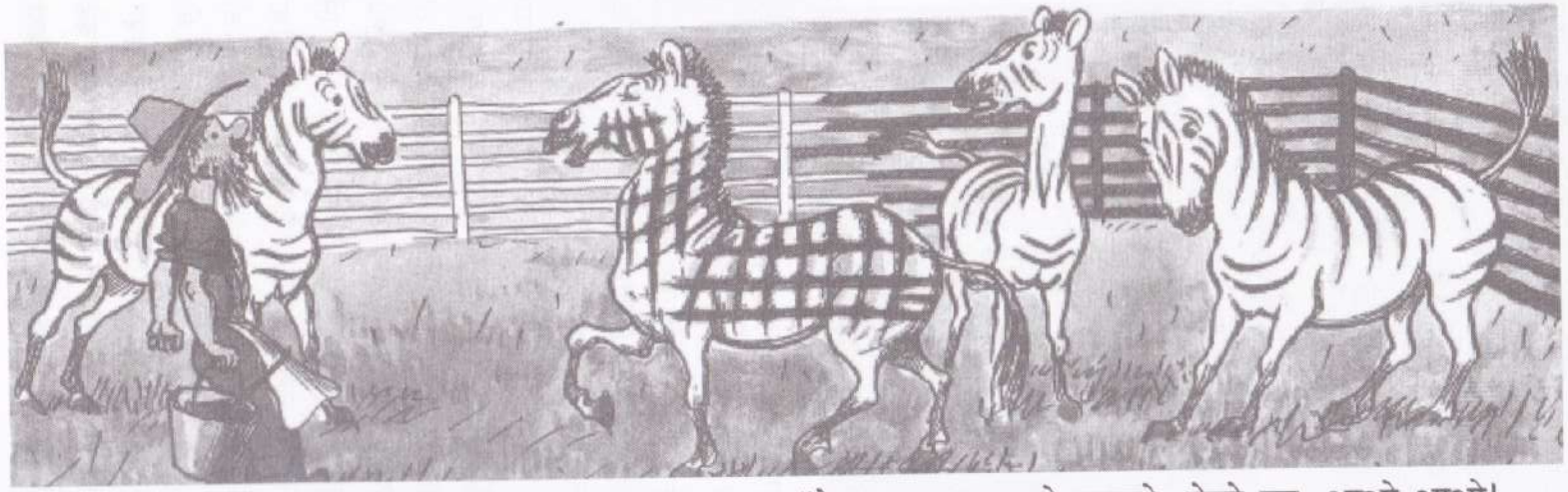

रंगसाज़ ने कहा ज़ेब्रे से, खीझ और हैरानी से –
"ये क्या हुआ तुम्हारे तन को, थोड़ी-सी नादानी से?"

"हे भगवान, बचाओ मुझको, देखो तुम, आओ-आओ!
मुझको कोई हुई बीमारी, अरे डॉक्टर बुलाओ!"

बालकूची

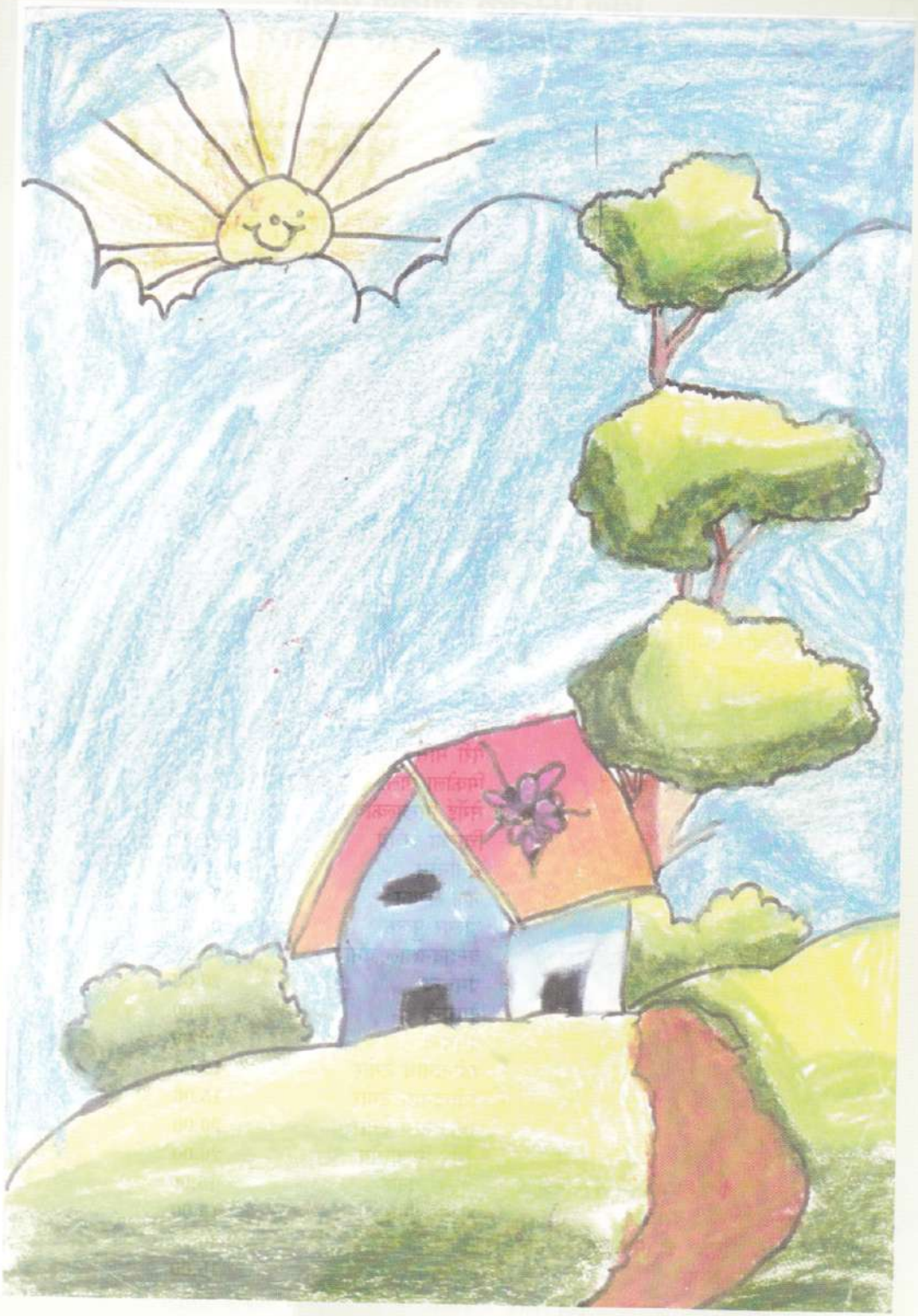

चित्रकार : ग्लोरिया, चण्डीगढ़

Title Code UPHIN44502/24-10-2013

बिन पुस्तक जीवन ऐसा
बिन खिड़की घर हो जैसा

अनुराग बाल पुस्तकालय

मनोरंजक, ज्ञानवर्द्धक, उत्कृष्ट पुस्तकों का संग्रह, कला, साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, खेलों आदि पर रोचक किताबें और पत्र-पत्रिकाएँ, प्रेरक जीवनियाँ, देश-विदेश का चुनिन्दा बढ़िया साहित्य

अनुराग ट्रस्ट

सोमवार से शनिवार, 12 से 8 बजे तक
डी-68, निरालानगर, लखनऊ-226020

अनुराग ट्रस्ट की दिलचस्प किताबें पढ़ो!

सच से बड़ा सच	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	25.00
गुड़ की डली	कात्यायनी	20.00
धरती और आकाश	अ. वोल्कोव	120.00
नीला प्याला	अरकादी गैदार	40.00
गड़रिये की कहानियाँ	क़यूम तंगरीकुलीयेव	35.00
चींटी और अन्तरिक्ष यात्री	अ. मित्यायेव	35.00
अन्धविश्वासी शेकी टेल	सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
चलता-फिरता हैट	एन.नोसोव, होल्गर पुक्क	20.00
गधा और ऊदबिलाव	मक्सिम गोर्की, सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
गुफा मानवों की कहानियाँ	मैरी मार्स	20.00
हम सूरज को देख सकते हैं	मिकोला गिल, दायर स्लावकोविच	20.00
मुसीबत का साथी	सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
आकाश में मौज-मस्ती	चिनुआ अचेबे	20.00
आश्चर्यलोक में एलिस	सर्वान्तेस	30.00
जिन्दगी से प्यार	जैक लण्डन	30.00
अजीबोगरीब किस्से	होल्गर पुक्क	15.00
झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई (नाटक)	वृन्दावनलाल वर्मा	30.00
गुल्ली-डण्डा	प्रेमचन्द	20.00
रामलीला	प्रेमचन्द	20.00
लॉटरी	प्रेमचन्द	20.00
तोता	रवीन्द्रनाथ टैगोर	15.00
पोस्टमास्टर	रवीन्द्रनाथ टैगोर	15.00
काबुलीवाला	रवीन्द्रनाथ टैगोर	20.00
मनमानी के मजे	सेर्गेई मिखालोव	20.00
आम जिन्दगी के मजेदार कहानियाँ	होल्गर पुक्क	15.00
नये जमाने की परीकथाएँ	होल्गर पुक्क	15.00
नन्हे गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामे	सुन यओच्युन	40.00
गोलू के कारनामे	रामबाबू	15.00

अनुराग ट्रस्ट के सभी प्रकाशनों के मुख्य वितरक – जनचेतना, डी-68, निरालानगर, लखनऊ-226020

जनचेतना, 114, जनता मार्केट, रेलवे बस स्टेशन रोड, गोरखपुर-273001

अनुराग ट्रस्ट की सभी पुस्तकों की सूची के लिए इस वेबसाइट पर जाएँ : janchetnabooks.org